अगस्त 2015
कश्मीर
संदेश
हिन्दी कश्मीरी संगम

नागरी लिपि परिषद् की ओर से हिन्दी कश्मीरी संगम को विनोबा नागरी पुरस्कार रु. 1500/- प्रदान किया गया बायें से दायें–ए. एन. कौल ''साहिल'' (संगम ट्रस्ट सदस्य) प्रो0 चमन लाल सप्रू (अध्यक्ष) डॉ. महेश शर्मा (केन्द्रीय मंत्री) मुख्य अतिथि डॉ0 बीना जी (सचिव) परमानन्द पांचाल (सचिव ना. लि. प) तथा पं. आनन्द मोहन जुत्शी ''गुलजार दहेलवी'' (मंचासीन) बायें से– ए. एन. कौल 'साहिव' प्रो. सप्रू, डॉ. महेश शर्मा, डॉ. महीप सिंह गुलजार दहेलवी, परमानन्द पांचाल

पोइट्री सोसाइटी ऑफ इंडिया तथा के. ई. सी. एस. एस. के तंत्वाधान में आयोजित लल्लद्यद की कविता पर संगोष्ठी में वक्ता– डॉ. बी. बी. धर, प्रो. चमन लाल सप्रू तथा डॉ. बीना बुदकी।

कश्यम ऋषि भवन, नोएडा में हिन्दी-कश्मीरी संगम पंडित जिन्दा कौल मास्टरजी की 132 वीं ने जयन्ती मनाई। इस अवसर पर उनके लोकप्रिय गीतों का गायन भी हुआ।

कश्मीर केन्द्रित एकमात्र हिन्दी पत्रिका

कश्मीर संदेश (त्रैमासिक) पूर्णांक-13

(साहित्य, संस्कृति एवं भाषा के संरक्षण-संवर्द्धन को समर्पित)

'हिन्दी कश्मीरी संगम' का प्रकाशन

वर्ष-3 अंक-4 अगस्त 2015/श्रावण सप्तर्षि संवत 5091 एक प्रति ₹ 40/- शुल्क वार्षिक ₹ 150/-

सम्पादकीय कार्यालय

ए-102, एस.जी., इम्प्रेशन, (निकट मेवाड़ इन्स्टीच्यूट) सेक्टर-4 बी, वसुन्धरा, गाजियाबाद-201012 (एन.सी.आर., दिल्ली)

मो. 07208339786, 09953390488

ई-मेल : beenadeepakbudki@gmail.com

●

प्रधान कार्यालय

हिन्दी कश्मीरी संगम

13-बी, ई-3, शताब्दी विहार

सेक्टर-52, नोएडा

(उ.प्र.)-201307

मो. 09871481177

Email :

hindikashmirisangam692012@gmail.com

●

आवरण

प्राचीन मंदिर – पानद्रेठअन (श्रीनगर)

इस अंक में

सम्पादकीय

कश्मीरी के लिए नागरी लिपि भी-क्यों ?

दिनांक 24 मई 2015 को दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र नोएडा में कैलाश सभागार में एक भव्य समारोह हुआ। इसका आयोजन हिन्दी कश्मीरी संगम तथा नागरी लिपि परिषद, राजघाट, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वाधान में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय संस्कृति, पर्यटन एवं नागर विमानन राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा थे। कश्मीरी भाषा के लिए प्रचलित नस्तालीख लिपि घाटी में मान्यता प्राप्त है किन्तु विस्थापित लाखों कश्मीरी भाषी नागरिक एवं नई पीढ़ी उक्त लिपि से अनभिज्ञ है। अतः नागरी लिपि के प्रचलन हेतु अभियान में हिन्दी कश्मीरी संगम अग्रसर है। संगम के द्वारा कश्मीरी भाषा के लिए वैकल्पिक लिपि के रूप में नागरी लिपि के प्रयोग के लिए उल्लेखनीय योगदान हेतु नागरी लिपि परिषद की ओर से विनोबा भावे नागरी पुरस्कार – सम्मान (रु. 15,000/- की धन राशि सहित) प्रदान किया गया।

बदलती हुई परिस्थितियों में अब कश्मीरी भाषियों की नई पीढी नागरी लिपि में ही लिखती हैं। लगभग एक सौ स्तरीय पुस्तकें पिछले पच्चीस साल में नागरी लिपि में लिखी गईं। नागरी लिपि में ''वाख'' नाम से एक स्तरीय साहित्यिक पत्रिका के साथ साथ कोशुर-समाचार (दिल्ली) कश्यपवाणी (जम्मू) मिलचार (मुम्बई) वितस्ता (कोलकाता) सुन्दरवाणी (चंडीगढ़) की त्रिभाषी पत्रिकाओं के कश्मीरी खण्ड नागरी लिपि में ही प्रकाशित होते हैं।

हमारा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि कश्मीरी भाषा के लिए नागरी लिपि को भी सरकारी मान्यता प्रदान करें तथा उर्दू सिंधी की भाति–''कॉउसिंल फॉर दि प्रमोशन ऑफ कश्मीरी लैंग्वेज'' की स्थापना करे। दिल्ली सरकार से भी निवेदन है कि सिंधी, भोजपुरी एवं मैथिली की भांति राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में बसे कश्मीरी समाज के हितार्थ कश्मीरी अकादमी की भी यथाशीघ्र स्थापना करे।

संवाद
आपके पत्र
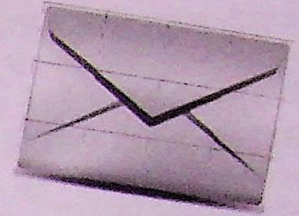
प्रिय बुदकी जी, नमस्कार।

कल (24/5/15) के आपको विनोबा नागरी पुरस्कार मिलने के समारोह में शिरकत की। वहीं 'कश्मीर सन्देश' पत्रिका मिली। पढ़ कर खुशी भी हुई और यह अनुभूति भी कि यह कश्मीर के कुल हालात का आईना है। वहाँ के लेखकों–ख़्वाह वो कहीं भी हैं–की आवाज़ इस में बराबर गूँजती प्रतीत होती है। उनके लेख, उन का जज़्बा, उनका काव्य, विशेषकर 'हब्बा कदल' से वितस्ता को भेंट की गई दो पुस्तकों का हवाला अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। पत्रिका का कुल लेखन पाठको को कश्मीरियों की अन्तरव्यथा महसूस करवाने में कामयाब है। व्यक्तिगत स्तर पर, मुझे अर्चना त्रिपाठी की दो कविताएं भी विशेष रूप से अच्छी लगीं।

हालांकि मैं वक़्त से आ गया था परन्तु आप बहुत व्यस्त थीं। ऐसे अवसरों पर यह स्वभाविक भी है। फंक्शन बहुत लम्बा चला और मुझे जनकपुरी आना था। अतः समाप्ति पर भी वैसी ही स्थिति बनी रही यानि कि कुछ विशेष बातचीत हो नहीं पाई। चलिए, फिर कभी सही।

सफल आयोजन-संचालन के लिए बधाई। प्रो. सप्रू जी को नमस्कार।

आपका बन्धु

डॉ. ओप प्रकाश शर्मा 'प्रकाश'
एसोसिएट प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय
सी 4, बी-110 (पॉकेट -13)
जनकपुरी नई दिल्ली - 58

◈

प्रिय बीना जी,

प्रणाम! मई 2015 का 'कश्मीर सन्देश' प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित चित्रावली द्वारा कश्मीर में सम्पन्न संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का विवरण देखकर प्रसन्नता हुई। सुदूर दक्षिण से हमारे भाई पूज्य डॉ. बालशौरी रेड्डी को भी कश्मीर के समारोह में देखकर आनन्द हुआ। आप लोग अपनी संस्था हिन्दी कश्मीरी संगम के माध्यम से अपनी भाषा कश्मीरी के साथ हिन्दी के माध्यम से पूरे देश को जोड़ते हैं। यह एक महत्त्व पूर्ण अभियान है। आपको इस राष्ट्रीय कार्य के लिए साधुवाद। हम भी यहाँ कर्नाटक में यही काम करते हैं।

आप कश्मीर में अबतक तीन वर्षों से राष्ट्रीय समारोह आयोजित करते आये हैं यह जानकर आनन्दित हूँ। मैं तो आजकल अकेली कहीं नहीं जाती हूँ। पूरे देश में हिन्दी का वातावरण बन जाये इस अभिलाषा के साथ

आपकी बहन,

बी. एस. शान्ताबाई,
सचिव, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति
178-चौथा मेन रोड, चामराज पेट, बैंगलूर 560017

◈

श्रीमती वीणा जी, नमस्कार,

कश्मीर सन्देश पत्रिका की जब से आजीवन सदस्य बनी हूँ बहुत खुश हूँ इस पत्रिका द्वारा सभी को काश्मीरी त्योहार, वहाँ कौन कौन विशिष्ट विद्वान, कवि, कवयित्रयाँ और वहाँ (काश्मीर के) के बारे में लोगों के विचार पढ़ कर बहुत अच्छा लगता है, जो जरूर बहुत सराहनीय व जरूरी है।

अभी मार्च अंक 2015 का जो पं. बिशन नारायण दर के बारे में डॉ. बी. एन. शर्मा ने आर्टिकल लिखा है। उसमें कई आपत्ति जनक बातें दर्ज हैं। जब तक पूरी सच्चाई नहीं मालूम हो तो दूसरों की छवि पर ये गलत जानकारी दे कर एक सराहनीय पत्रिका की छवि नहीं बिगाड़नी थी। जिनके बारे में लिखा है वह हमारे अपने है हमें व उनके परिवार वालों को बेहद नाराज़गी है। जिन की छवि धूमिल की है वह पं. रूप नारायण दर ग्वालियर स्टेट में जज व एक नामी इज्जतदार व्यक्ति थे। उनके लिये लिखा उनके साथ तवायफ थी जो मुरार में रहती थी। जब कि उनके बारे में (शिवनाथ चक का सुना था) और उनको लिखने वाले ने रूपनारायण जी के बारे में लिखकर उनको बिना कारण बदनाम किया है।

कैलाश नारायण दर ग्वालियर स्टेट में डिप्टी कलैकटर (डिप्टी कस्टेडियन) पद पर थे। बेहद शरीफ ईमानदार उनके लिये लिखा बेगम थी उनकी व तीन बेटियाँ थीं, जबकि

कामिनी, पद्मा 2 बेटियाँ व राम एक बेटा है, जो कलकत्ते में अच्छी पद पर है वे नाराज़ हो रहे हैं कि ये क्या बकवास किस सिरफिरे ने लिखा है। मैं उन पर केस करूंगा, हमारे पिता और दादा की इज्जत का मज़ाक बनाया है। हमने समझाया कि शर्गा साहिब नहीं रहे हैं। उनके बेटे राम कह रहे हैं कि पत्रिका को लिखो या मुझे पता दे दो कि वह अगले अंक में सही जानकारी देकर गलती सुधारें व माफी माँगें।

पं. महाराज नारायण दर के बारे में भी गलत लिखा है कि वह केवल शायरी कर आराम से जिन्दगी गुज़ारते थें उन्होंने कुछ नहीं किया। जब कि व Electricity Bornd में असि. इंजीनियर थे। मन्दसौर में नौकरी किसी पारिवारिक परेशानी के कारण छोड़ दी थी और ग्वालियर में लैंड रिकॉर्ड में पदस्थ थे फिर वहीं से रिटायर हुए। बताइये जब शर्गा साहिब को पता नहीं था तो गलत लिखकर पूरे खानदान पर कीचड़ क्यों उछाली, शर्गा साहिब नहीं मरने वाले के बारे में कुछ कहना हमें शोभा नहीं देता है।

आप को अपनी पत्रिका की भूल सुधारनी होगी अगले अंक में लिख कर व आगे भी जिनके बारे में कोई लिखता है उनके परिवार वालों से सही जानकारी के बाद छापें।

आप इतनी समझदार विदुषी है व एक अच्छे कार्य में संलग्न है। मैं आप को यही निवेदन करती हूँ कि कृपया इन भूलों को नजरअंदाज़ न करते हुऐ माफी मांगे। ये सब आपको लिखते हुऐ अच्छा नहीं लग रहा है पर किसी की इज्जत के साथ खिलवाड़ नहीं हो।

अंजलि कीर्ति रैना

डी. 46 - आनन्द निकेतन नई दिल्ली

◈

सम्पादक की टिप्पणी

'कश्मीर सन्देश' फरवरी 2015 में प्रकाशित पंडित विशन नारायण दर के सम्बन्ध में लिखे गये लेख में कुछ आपत्तिजनक बातें, छपने के लिए हमें खेद है। वास्तव में इसके लेखक डा. बी. एन. शर्मा ने ''कश्मीरी पंडितो के अनमोल रत्न'' नामक सात खण्डों में प्रकाशित लेख गहन शोध करके प्रकाशित किये। प्रस्तुत लेख अपने देहान्त से पूर्व उनकी अन्तिम रचना हमने प्रकाशित की। यदि वो जीवित होते तो हम उनसे इस संदर्भ में जानकारी हासिल करते। वास्तव में पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के लिए सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। फिर भी यदि बहिन जी आपको तथा कथित आपत्तिजनक बातों से दुःख हुआ है उसके लिए हम दिल से खेद प्रकट करते हैं। पत्रिका की कश्मीर संदर्भ में प्रकाशित अन्य सामग्री की प्रशंसा करने के लिए धन्यवाद।

सम्पादक

◈

प्रिय आत्मन श्री चमन लाल जी

जय सच्चिदानंद

दिग्विजयी ललितादित्य लेख हेतु अभिनंदनम् महोदय महाभारत तथा पुराण ज्ञानकोश की वंशावलियों के पश्चात् बृहतकथा/कथासरित्सागर तथा कल्हण कृत राजतरंगिणी में भारत का क्रमबद्ध इतिहास गत 5116 वर्षों का प्राप्त है। कल्हण प्रयुक्त सप्तर्षि सम्वत कलियुग सम्वत 25 में प्रारम्भ हुआ मेरे विचार से समुचित है। जनमेजय के 4 दानपत्र 89 युधिष्ठिर सं. के 3013 ई. पू. तथा कलि सम्वत् प्रारम्भ 10-2-3102 ई. पू. के आधार पर कल्हण का तिथि क्रम सही है। मेरे शोध के अनुसार स्नेह साम्राज्य संस्थापक दिग्विजयी कौशाम्बी नरेश उदयन 1586-1582 ई.पू. के समकालीन महात्मा बुद्ध का समय 1620-1540 ई. पू. है। यह फाइहान की गणना से भी 1100 ई. पू. से पहले का है।

कल्हण राजतरंगिणी के पश्चात का क्रमबद्ध इतिहास अन्य राजतरंगिणी साहित्य के अनुसार क्या है कृपया सूचित कर अनुगृहीत करें। इसमें ग्यारहवी शताब्दी से लेकर कौन कौन से शासकों ने कश्मीर में शासन किया कब से कब तक मात्र सूचित कर अनुगृहीत करें।

मेरा शोध विश्व का वास्तविक इतिहास मनुशतरूपा से लेकर नरेन्द्र मोदी तक - साहित्य तथा संस्कृताभिलेखों पर आधारित संकलित करने हेतु है।

वांछित तथ्य लेख के रूप में भी प्रदान करें तो उसे प्रकाशित भी करूंगा।

महाभारत युद्ध, गीताजयंती दिवस-मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी 3138 ई. पू., महर्षि वेदव्यास जन्म 3298 ई. पू. श्रीकृष्ण समय 3227-3102 ई.पू. तथा रामायण युग गत 28वें द्वापर युग के 864000 वर्षों से पहले/कृपया इसे पुष्ट करें। शुभम् मंगलम

डॉ. कृष्णनारायण पाण्डेय

समन्वय कुटीरम्, ई. 1052,

राजाजी पुरम् लखनऊ-226017

नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली

—— प्रशस्ति पत्र ——

'हिंदी कश्मीरी संगम' कश्मीर की एक ऐसी संस्था है, जे कश्मीर के नष्ट और लुप्त साहित्य को फिर से प्रकाश में लाने के कार्य में लगी है। इस संस्था की स्थापना सन् 2012 में **डॉ. बीना बुदकी** के सतत प्रयासों द्वारा हुई। जिस में उनके साथियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। **प्रो. चमन लाल सप्रू** इस संस्था के संस्थापक अध्यक्ष है। भारत के विभिन्न नगरों में रह रहे कश्मीरी भाषा के विद्वान इस संस्था के परिचालन में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। कश्मीरी भाषा और साहित्य को नागरी लिपि के माध्यम से लोगों तक पहुंचाना संस्था का मुख्य उद्देश्य है। कश्मीर की युवा पीढ़ी को देवनागरी लिपि के माध्यम से कश्मीरी भाषा के प्रति आकर्षित करना और भारत की मुख्य धारा के साथ जोड़ना हिन्दी कश्मीरी संगम का मुख्य ध्येय है।

कश्मीरी साहित्य का नागरी लिपि में पुनर्लेखन और उसका अन्य भाषाओं के साहित्य को कश्मीरी में रूपांतरित कराना भी इस संस्था का मुख्य कार्य है। अन्धकार में छिपे लेखकों को प्रकाश में लाने और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कराने में यह संगम उनकी सहायता करता है। साहित्य में संतों की भूमिका और भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के प्रति संस्था कटिबद्ध है। पुरानी पांडुलिपियों का भी हिन्दी कश्मीरी प्रकाशन के तहत देवनागरी लिपि में प्रकाशित कराने का कार्य कर रही है। युवा पीढ़ी को नागरी लिपि की ओर आकर्षित करने में इस संस्था की महती भूमिका है।

नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में 'हिन्दी कश्मीरी संगम' के प्रशंसनीय योगदान को दृष्टि में रखते हुए नागरी लिपि परिषद् संगम को पन्द्रह हजार रुपयें (15,000/-) के विनोवा नागरी पुरस्कार से सम्मानित कर गौरव का अनुभव करती है।

डा. परमानन्द पांचाल
महामंत्री
नागरी लिपि परिषद्
राजघाट नई दिल्ली-11002

डॉ. भवानीलाल ''भारतीय''

जन्म शताब्दी वर्ष पर 'हिन्दी कश्मीरी संगम' की श्रद्धांजलि

रजत-पट के राम

कश्मीरी कलाकार प्रेम अदीब

(1916-1959)

भगवान् राम के मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र को रजत-पट पर उतारने वाले कलाकार प्रेम अदीब मूलतः कश्मीरी थे। उनका जन्म 10 अगस्त, 1916 ई. को उत्तरप्रदेश के सुलतानपुर जिले में हुआ। उनकी माता जोधपुर के पं. लक्ष्मणप्रसाद राज़दान की सुपुत्री थी। उनकी मैट्रिक की शिक्षा ननिहाल जोधपुर में हुई जहाँ 1932 ई. में दरबार हाईस्कूल से मैट्रिक पास करने के बाद से जसवंत कॉलेज जोधपुर में प्रविष्ट तो हुए किंतु बी.ए. नहीं कर पाये। फिल्मों में रुचि होने के कारण प्रेम अदीब इस दुनिया में अपना भाग्य अजमाने के लिए पहले कलकत्ता गये और न्यू थियेटर्स के मालिक बी.एन.ए. सरकार से मिले, किन्तु बात नहीं बनी। तब वे लाहौर गये जो तीसरे दशक में फिल्म-निर्माण का महत्वपूर्ण केंद्र था। वहाँ दो वर्ष तक रहने पर भी जब उन्हें सफलता नहीं मिली, तो 1936 में वे बंबई आ गये। प्रेम अदीब ने अपने फिल्मी जीवन की इब्तिदा राजपूताना फिल्मस की 'रोमांटिक इंडिया' से की। उन्हें सौ रुपया मासिक वेतन मिलता था और वे अपने काम से संतुष्ट थे। 1936 से 1942 ई. तक उनकी जो सामाजिक फिल्में आयीं उनमें 'खान बहादुर' तथा 'डाइवोर्स' (मिनर्वा मूवीटोन), 'घूँघटवाली', 'स्टेशन मास्टर' तथा 'चूड़ियाँ' उल्लेखनीय रहीं। इनमें उनके सह कलाकार, नूरजहाँ, नसीम, शोभना समर्थ, के.एन. सिंह तथा जीवन जैसे प्रसिद्ध अदाकार थे।

रजतपट पर राम की भूमिका में प्रेम अदीब सर्वप्रथम 1942 ई. में आये जब प्रकाश पिक्चर्स द्वारा निर्मित और विजय भट्ट द्वारा निर्देशित 'भरत मिलाप' में वे राम बने। चित्र में सीता का किरदार प्रसिद्ध अभिनेत्री शोभना थीं जो नूतन और तनूजा की माँ थीं ने निभाया था। वे आगे प्रेम अदीब के साथ रामायण के कथानक-प्रधान अनेक फिल्मों में आयीं। 'भरत मिलाप' आदर्श-प्रधान फिल्म थी, जिसमें कर्त्तव्य और भ्रातृप्रेम के द्वन्द्व को राम तथा भरत के चरित्रों द्वारा पेश किया गया था। अब फिल्म में उच्चारित यह वाक्य 'भावना से कर्त्तव्य ऊँचा होता है' वर्षों जनता की जबान पर चढ़ा रहा। अगले वर्ष रामायण के उत्तरवर्ती कथानक पर आधारित फिल्म के निर्देशक भी विजय भट्ट ही थे और सीता की भूमिका में शोभना समर्थ ने अपनी करुणासिक्त वाणी के द्वारा नारी की परवशता तथा पीड़ा को साकार किया था। लवकुश के युगल कण्ठों में गाया गीत 'भारत की इक सन्नारी की हम कथा सुनाते हैं' दर्शकों के कण्ठों का हार बन गया। गायक स्वर राम आप्टे तथा मधुसूदन का था। प्रेम अदीब की अदाकारी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को शताब्दियों बाद साकार कर दिया। लोकप्रियता की दृष्टि से अव्वल रहे 'राम-राज्य' ने हफ्तों तक सिनेमाघरों को गुलज़ार बना रखा। 'राम राज्य' के आदर्श को मान्य करने वाले महात्मा गाँधी ने भी समय निकाल कर इस चित्र का अवलोकन किया। उन्हें यह फिल्म खूब पसंद आई।

1948 ई. में विजय भट्ट ने जब 'राम बाण' का निर्देशन किया तो पुनः प्रेम अदीब की मुख्य भूमिका में लेना जरूरी था। यहाँ भी शोभना समर्थ सीता की भूमिका में थी। 1950 ई. में रामकथा पर आधारित दो फिल्में आयीं—नाना भाई भट्ट की 'लव-कुश' तथा उन्हीं के निर्देशन में मोशन पिक्चर्स द्वारा निर्मित 'राम जन्म'। इन्हें भी दर्शकों की प्रशंसा तथा अभिनंदन मिला। 1954 ई. में रवि प्रोडक्शन्स की 'हनुमान जन्म' तथा प्रकाश पिक्चर्स की 'रामायण' में प्रेम अदीब पुनः राम के रूप में आये।

रामकथा को विभिन्न भाषाओं तथा विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है। कृष्णार्जुन युद्ध की भाँति राम-हनुमान युद्ध का प्रसंग भी यत्र-तत्र वर्णित हुआ है। इस अप्रसिद्ध कथानक को लेकर 1957 ई. में रवि कला चित्र ने 'राम हनुमान युद्ध' को जब फिल्मी पर्दे पर प्रस्तुत किया तो प्रेम अदीम को राम का किरदार देना अनिवार्य ही था। इस बार सीता की भूमिका में निरूपा राय थीं। निर्देशन एस. एन. त्रिपाठी का था। रामकथा संबंधित प्रेम अदीब की अंतिम फिल्म 'भक्त विभीषण' थी, जिसका निर्माण रजनी चित्र ने सर चटर्जी के निर्देशन में 1958 ई. में किया। दर्शकों के लिए प्रेम अदीब तथा राम एकाकार हो गये थे।

राम कथा के अतिरिक्त अनेक ऐतिहासिक फिल्मों में भी प्रेम अदीब ने सफल रोल किये। 1945 में बनी 'विक्रमादित्य' के निर्देशक तो जाने माने निर्देशक विजय भट्ट ही थे। 1947 ई. में 'कृष्ण सुदामा' फिल्म में प्रेम अदीब ने कृष्ण का पार्ट किया। भगवान शिव के कथानक पर आधारित 'भोला शंकर' में उनके सह-कलाकार महिपाल थे, जो प्रेम अदीब की भाँति जोधपुर में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। 'प्रभु की छाया', 'कृष्ण विवाह' तथा 'रामनवमी' उनकी पौराणिक कथानकों पर आधारित अन्य फिल्में थीं। 1959 ई. में वे पृथ्वीराज चौहान के किरदार में आये जब हरसुख भट्ट के निर्देशन में भारत के अंतिम हिंदू सम्राट के कथानक को रजतपट पर उजागर किया गया। निहायत मासूम चेहरे वाले प्रेम अदीब दीर्घजीवी नहीं हुए। केवल तैंतालीस वर्ष की आयु में 25 दिसंबर, 1959 ई. को अपने साढ़ू इकबालनाथ मुट्टू के घर पर आयोजित एक भव्य पार्टी में शिरकत करने गये, प्रेम अदीब का निधन दिमाग की एक नस फट जाने के कारण हो गया।

अत्यंत सौम्य व्यक्तित्व के धनी प्रेम अदीब के चेहरे की कोमलता तथा मासूमियत ने उन्हें देवपुरुषों की लोकोत्तर भूमिकाओं के लिए उपयुक्त समझा था। अपने जमाने की प्रमुख अभिनेत्रियों के साथ उन्होंने कार्य किया। नसीम बानो, शोभना समर्थ, शांता आप्टे, रत्नमाला तथा दुर्गा खोटे जैसी जानी-मानी अदाकाराओं ने उनके साथ नायिकाओं की भूमिकाएँ कीं। सोहराब मोदी, विजय भट्ट, राम दरयानी तथा नंदलाल जसवंतलाल जैसे नामी निर्देशकों ने उनकी कला को माँजा-सँवारा था।

सम्पर्क- 8/423, नंदनवन, जोधपुर-342008

❑

10वां विश्व हिन्दी सम्मेलन

10-11-12 सितंबर 2015 को भोपाल में 10वां विश्व हिन्दी सम्मेलन हो रहा है। कश्मीर की प्रतिनिधि हिन्दी संस्था हिन्दी कश्मीरी संगम पूरी दुनिया से पधारने वाले हिन्दी प्रेमियों का हार्दिक स्वागत करती है। हमें विश्वास है वर्तमान ऐतिहासिक सम्मेलन के आयोजन से संयुक्त राष्ट्र संघ में अंग्रेजी, रूसी, चीनी, जर्मन, फ्रेंच तथा अरबी के साथ साथ हिन्दी भी संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा बनेगी।

इस शुभकामना के साथ! वंदे मातरम

हिन्दी कश्मीरी संगम परिवार

श्रावण कृष्ण चतुर्दशी इस वर्ष 13 अगस्त को 132 वीं जयन्ती पर

श्रद्धा स्मरण

डॉ. कौशल्या वली

पण्डित ज़िन्दा कौल "मास्टर जी"

स्व. कौशल्या जी जम्मू विश्वविद्यालय में डीन फैकल्टी ऑफ ओरियंटल साईंसिज और अध्यक्ष स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग थीं। कश्मीरी पण्डित सभा जम्मू की अध्यक्ष होने के नाते उन्होंने 1990 में आतंकवाद से प्रभावित विस्थापित कश्मीरी पंडित समाज की उल्लेखनीय सेवा की।

–सं.

मैं श्रीनगर के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान वसन्त गर्लज़ हाई स्कूल में पढ़ती थी। प्रातः स्मरणीय मास्टरजी प्रायः वहा आकर हमें सम्बोधित करते थे। उनकी लिखी हुई उर्दू कविता **हर ज़र्रा ऐ इमकान है में जलवा तेरा-ऐला मकान।** हम नित्य एसेम्बली में प्रार्थना के रूप में सामूहिक रूप से पढ़ते थे। वर्ष में एक बार Humanitarian Leage (जीव दया मण्डल) के तत्त्वावधान में उसके वार्षिक उत्सव के अवसर पर वो मुख्य अतिथि होते थे। उनकी रचित **पत्र-पुष्पं** (हिन्दी कविता संग्रह) में बकरी और मेमने का संवाद–कविता में लिखित का मंचन भी करती थीं। मास्टर जी के कार्यक्रमों में मेरी और मेरे समकालीन मेरे प्रिय सहपाठी प्रो. चमनलाल सप्रू की अहम भूमिका होती थी। हम दोनों के प्राईवेट टयूटर प्रो. द्वारिकानाथ गिगू, वसंत गर्लज हाई स्कूल में उन दिनों टीचर थे। उक्त कार्यक्रमों में वो हमारा मार्ग दर्शन करते थे।

मास्टर ज़िन्दा कौल की एक कश्मीरी कविता–

स्मरण पतुंन्य दिव़ॉनम
प्रेयमुक निशानुं व्यसिये॥

कश्मीरी समाज में बड़ी लोकप्रिय थी। **सुमरन** नाम से उनकी कविताओं का संग्रह कश्मीरी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। इस काव्य पुस्तक पर कश्मीरी भाषा के लिए 1956 में प्रधानमंत्री द्वारा पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। प्रो. अर्जुननाथ रैणा के प्रयत्नों से मास्टर जी की उर्दू कविताओं का भी एक संकलन **दीवान-इ-साबित** प्रकाशित हुआ था। उर्दू में वो 'साबित' उपनाम से कविता रचते थे। इस प्रकार हम देखते है मास्टर जी तीन भाषाओं में काव्य रचना करते थे–कश्मीरी, उर्दू और हिन्दी। अंग्रेजी भाषा के विद्वान होने के कारण उन्होंने **सुमरन** काव्य संग्रह का स्वयं अंग्रेज़ी में अनुवाद करके मूल के साथ प्रकाशित किया।

कश्मीरी भाषा के प्रसिद्ध भक्त कवि परमानन्द (1791-1885) के काव्य को उनके भक्तों के पास सुरक्षित पाण्डुलिपियों से संकलित कर अंग्रेज़ी अनुवाद सहित **परमानन्द सूक्ति-सार** शीर्षक से प्रकाशित किया।

मास्टर जी वास्तव में आधुनिक काल के कश्मीरी काव्य के जन्मदाताओं में अग्रणी थे। कश्मीरी साहित्य में पं. ज़िन्दा कौल मास्टर जी का वही स्थान है जो बांगला साहित्य में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर का है। अतः यदि

मास्टर जी को कश्मीर का टैगोर कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। **सुमरन** में संकलित उनकी कविताओं की भावधारा गीतांजलि से समानता रखती है।

मास्टर जी का काव्य मानव प्रेम और विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त पर आधारित है। परमात्मा पर अटूट विश्वास रखते हुए भी उनसे गिले शिकवे करते हैं। मनुष्य के दुख-दर्द की पीड़ा से आहत अपनी कविता **मजबूरियाह** (मजबूरी) में इस भावना को यूँ बयान करते हैं।

''जिसने दूर रहते छिपकर कानों में रूई ठोंस ली है। क्या कभी हमारा खयाल आता है उन्हें (परमेश्वर को).....

यह शिकायत एक नास्तिक के मन से उभरी हुई नहीं है, अपितु एक बेटे की शिकायत अपने पिता से है। वह कहते हैं–

''मुझे देखकर तुम कहीं दूर आकाश में छिपे हुए हो। तुम आख्यानों में छिपे हुए हो। इस दूरी को मैं सहन नहीं करूँगा।''

मास्टर जी ने अपनी जीवन काल में अनेक दुःख सहे। उन्होंने अपने एक पुत्र को अपने सामने इस संसार से विदा होते हुए देखा। दुःख के अथाह सागर में डूबकर उन्होंने कहा–

''मनुष्य रोता, आँसू न पीता, रोने का फल क्या होगा यह भी देख लिया। आँखों से आँसू बहाकर और चट्टानों के साथ सिर मारकर.......आकाश में ये तीर चलाकर बस मजबूरी है–लाचारी है।''

वह प्रभु से शिकायत करते हैं–''हमारा शहर बुरा हो चला है; रहने लायक नहीं है। लूट-खसूद में साझेदारी हो गई है बस बीच में मिस्कीन (बेचारा) मारा गया है।

हे प्रभु लगादे मेरी नैय्या पार।''

मास्टर जी की कविता आज भी मानव की भावनाओं को, कमियों को प्रकट करती है और आगे भी करेगी जो उस समय के अनुकूल है।

डॉ. अनी बेसंट के साथ इनकी भेंट हुई थी। इस तरह थियासाफिकल सोसाइटी के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर मास्टर जी मानव-मानव में सौहार्द की भावना को पुष्ट करते हैं।

उनकी कवितायें गीतांजलि कामायनी और दीवान-इ-ग़ालिब के समान है।

मास्टर जी को विश्वास था ईश्वर के प्रति प्रेम में।

वह कहते है–

''स्वयं माया का निर्माण कर वह उसे जीने इस संसार में आये हैं। कभी टैगोर बनकर, कभी शंकराचार्य और कभी बुद्ध बनकर आये हैं। हां कभी मुझ जैसा बुद्धू बनकर भी यहां आये हैं।

''वह (प्रभु) हमें सान्त्वना देने आये हैं–टूटे दिल वालों की आशा बनकर, बेसहारा जनों का सहारा बनकर जाओ उस सुदामा से पूछकर आओ जिन्हें उन्होंने वर लिया।''

मास्टर जी को अपनी विवशताओं का एहसास था और कहते हैं–

''कालिदास के भाग्य में पत्थर लिखे थे ऐसा बुद्धिमानों ने कहा है। जिसे भाग्य ने दुर्घटनाओं में उलझा दिया हो वह बेचारा बुद्धिमानी का क्या करें? □

अमेरिका की ढींगरा फांउडेश ने वरिष्ठ कथाकार श्रीमती चित्रा मुद्गल को हिन्दी चेतना अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मान से विभूषित करने का निर्णय लिया है। सम्मान के साथ बहन चित्रा जी को पाँच सौ डालर भी पुरस्कार स्वरूप दिये जायेंगे। चित्रा जी 28 अगस्त 2015 को अमेरिका के लिए उड़ान भरेंगी। हिन्दी कश्मीरी संगम परिवार की आदरणीया सदस्य एवं मार्ग दर्शक को संगम परिवार की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

डॉ. वन्दना वागेश्वरी

कश्मीर शैव दर्शन एवं अद्वैत वेदान्त पर एक दृष्टि

अत्यन्त प्राचीन काल से शैव दर्शन पर आधारित शैव मत का प्रचार होता रहा है। पुरातत्व अन्वेषकों के अनुसार हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से यदि कोई निष्कर्ष निकलता है तो वह है सिन्धु घाटी संस्कृति में शिव की मान्यता और व्यापकता और यह व्यापकता तथा मान्यता हजारों वर्षों की उथल-पुथल के उपरान्त समकालीन भाषा में आज भी निरन्तर चली आ रही है। काल और देश की सीमाओं को लांघती हुई यह शैव परम्परा आज भी भारतीय जन मानस में सर्वाधिक महत्व रखती है।

कश्मीर की धरती में पनपने वाले अद्वैतवादी शैवदर्शन को प्रत्यभिज्ञा शास्त्र भी कहा जाता है। प्रत्यभिज्ञा सिद्धान्त यह है कि "अज्ञान" की निवृत्ति के पश्चात आप्तपुरुषों के वचनों से जीव को ज्यों ही ज्ञान हो जाता है कि "मैं शिव हूं", तुरंत ही उसे आत्मस्वरूप शिवत्व का साक्षात्कार हो जाता है। क्योंकि प्रत्यभिज्ञा का अर्थ ही यह है अपने आपको जानना, पहचानना। जब साधक को अपने स्वरूप का ज्ञान होता है तो शिव का साक्षात्कार भी हो जाता है।

इसे ईश्वराद्वयवाद इसलिए कहा जाता है कि इसमें सृष्टि, स्थिति और संहार एक शिव की ही अवस्थाएं हैं। इसमें शिव ही केवल मात्र तत्त्व है। नट के तुल्य ईश्वर (शिव) से नाना प्रकार की भूमिका ग्रहण करता है। अज्ञान, माया, जगत्, आत्मा आदि स्वेच्छा परिगृहीत रूप है। इस जगत में सब शिवरूप है। शिव ज्ञाता और ज्ञेय, प्रमाता और प्रमेय, दोनों है। शिव अनुभवकर्ता भी है और स्वयं अनुभूत पदार्थ भी है। अपने अन्तरस्वरूप में ही निहित अद्‌भूत शक्ति के माध्यम से वही स्वयं ब्रह्माण्ड के रूप में प्रकट होता है।[1] इसमें शिव का प्राधान्य होने से शिव ही एकमात्र सत्ता है जिससे जगत की उत्पत्ति होती है।[2] काश्मीर शैव दर्शन अपने शुद्ध आगमिक स्वभाव को न छोड़ते हुए भी वैदिक परंपरा को स्वीकार किए हुए है।[3] तन्त्रालोककार के अनुसार साधक को गर्भाधान से लेकर विवाह तक के समस्त संस्कारों को वैदिक विधानों के अनुसार निभाना चाहिए।[4] परन्तु जहां तक मोक्ष प्राप्ति के उपायों की श्रेष्ठता की बात है, काश्मीर शैव दर्शन वैदिक मार्ग की अपेक्षा कौल, त्रिक आदि आगमिक मार्ग को ही सर्वोत्तम मार्ग स्वीकार करता है।[5] अद्वैत वेदान्त दर्शन (शंकराचार्य का अद्वैत शैववाद) का मूल स्रोत वेद एवं विशेषकर उपनिषद हैं। अतः यह निगम (वेद, वेदान्त) परम्परा से सभी के हित, कल्याण के लिए प्रसारित होता हुआ अवान्तर काल में गौडपाद, बादरायण एवं विशेषकर जगद्‌गुरु शकराचार्य एवं सदानन्द के काल पर्यन्त विशुद्ध दार्शनिक रूप में विख्यात हुआ।

अद्वैत शैव दर्शन परमसत्ता को विश्वोत्तीर्ण तथा विश्वमय मानता है।[6] यह जगत शिव की लीला का ही विलास है। जिस प्रकार अग्नि से उष्णत्व, हिम से शीतलत्व, सूर्य से उसकी किरणें तथा पुष्प से सुगन्धि पृथक् नहीं होती, उसी प्रकार शिव से शक्ति अपृथक् है।[7] काश्मीर शैव दर्शन में शिव चित्त, आनन्द, इच्छा, ज्ञान और क्रियादि अनन्त एवं अबाधित शक्तियों से समन्वित है[8] एवं सृष्टि, स्थिति, संहार, विलय तथा अनुग्रह रूप पांच कार्यों को सतत्

करता रहा है।[9] जीव मन और शरीर का पुतला मात्र नहीं है। जीव शिवरूप ही है और शिव जीव से कर्म करवाता है इसका अभिप्राय यह है कि शिव जीव को कर्म करने के लिए अभिप्रेरित करता है। अतः वास्तविक कर्ता शिव ही है, किन्तु कर्म करने का भार जीव पर है, शिव पर नहीं।

अद्वैत वेदान्त (शंकराचार्य के अद्वैत शैववाद) में परब्रह्म को केवल शुद्ध ज्ञान स्वरूप माना गया है। उसे निष्क्रिय और अस्पन्द कहा गया है। परन्तु काश्मीर शैव दर्शन में परम शिव को ज्ञान रूप और क्रिया रूप उभयविध माना गया है। दोनों ही रूपों का परिपूर्ण सामरस्य परम शिव है। जो कुछ भी इस संसार में दिखता है वह भी वही है। जैसे मिट्टी के घड़े और सकोरे आदि बरतन मिट्टी ही हैं वैसे ही सृष्टि के स्थूल पदार्थ तथा सारा प्रपंच परमशिव ही है। वेदान्त के अनुसार एकमात्र ब्रह्म सत्य है अतएव नित्य है और जगत मिथ्या है, अतएव अनित्य है। इसके विपरीत काश्मीर शैव दर्शन में जगत् को वेदान्त की भांति विवर्तरूप, अतएव मिथ्या नहीं माना गया है।[10] शिव और शक्ति का सामरस्य रूप अद्वय परमेश्वर इस जगत् के समस्त पदार्थों में अनुस्यूत है। यही कारण है कि आत्म परमेश्वर को विश्वोत्तीर्ण के साथ-साथ विश्वमय कहा जाता है।[11] वह चितिशक्ति विश्वसिद्धि के लिए पूर्ण स्वतन्त्र है[12] और अपनी इच्छा से ही बाह्य उपादानादि अथवा ब्रह्मादि की भांति पराधीन हुए बिना ही स्वयं को आधार बनाकर विश्व का उन्मीलन करती है।[13]

अद्वैत वेदान्त में जगत्-प्रपंच के मूलभूत तत्वों के विषय में कहा गया कि ब्रह्म की एकमात्र पारमार्थिका सत्ता है। काश्मीर शैव दर्शन में भी मूलभूत एक ही पारमार्थिक तत्व आत्म–परमेश्वर का माना गया है। परन्तु सृष्टि विकास की दृष्टि से शिव, शक्ति, सदाशिव, ईश्वर, सद्विद्या, माया, कला, विद्या, राग, काल, नियति, पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, मन, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच तन्मात्राएं, पांच कर्मेन्द्रियां तथा पांच स्थूल भूतों के परिपेक्ष्य में 36 तत्त्व माने गये हैं।

अद्वैत वेदान्त के अनुसार श्रवण, मनन, निदिध्यासन और समाधि से ज्ञानपूर्वक आत्मसाक्षात्कार होता है क्योंकि इससे अज्ञान और उसका प्रपन्च नष्ट हो जाते हैं।[14] परन्तु अद्वैत शैवमत में शास्त्र, गुरु इत्यादि के उपदेशपूर्वक बुद्धि विषयक अज्ञान दूर होने से बौद्ध ज्ञान होता है। परन्तु इसके साथ ही अनुपाय (परा पूजा), शाम्भवादि उपायों के अनुसरण, शक्तिपात अथवा परमसत्ता के शक्तिपात अथवा परमसत्ता के अनुग्रहपूर्वक पुरुष विषयक अज्ञान दूर होने से पौरुष ज्ञान होता है।[15]

संदर्भ-संकेत

1. स एवं भगवान स्वस्वातन्त्र्यादनतिरिक्ता ...। स्पन्द निर्णय पृ. 10
2. तेन शब्दार्थचिन्तासु न सावस्था न यः शिवः। स्पन्द कारिका 2-29
3. काश्मीर शैव दर्शन, पृ. 1
4. गर्भाधानादितः कृत्वा यावदुद्वाहमेव च। तावत्तु वैदिकं कर्म पश्चाच्छैवे ह्यनन्यमाक्। तन्त्रालोक, खं 3, 5 278
5. वेदाच्छैवं ततो वामं तो दक्षः ततः कुलम्। ततो मतं ततश्चापि त्रिकं सर्वोत्तम परम्॥ वही खं 1, 549
6. क. प्रपन्चोतीर्णरूपाय नमस्ते विश्वमूर्तये। सदानन्द प्रकाशाय स्वात्मनेऽनन्तशक्ये॥ महा. उप.विं. श्लो.।

   ख. "विश्वोत्तीर्ण विश्वमयं च–इति त्रिकादिदर्शनविदः"–प्र. हृ.टी.पृ. 62।
7. शि.दृ. 3-2, 3-7
8. आत्मैव सर्वभावाषु स्फुरन् निर्वृतचिद्विभुः। अनिरुद्धेच्छाप्रसरः प्रसरद्दृक्क्रियः शिवः–वही –1-2
9. सृष्टिसंहारकर्तारं विलयस्थितिकारकम्। अनुग्रहकरं देव प्रणतार्तिविनाशनम्॥ स्वच्छ तं., 1-3॥
10. परा.प्रा., पृ. 2
11. परा.हृ.टी., पृ. 62
12. क. "तत्र स्वात्मदेवताया एव सर्वत्र कारणत्वं सुखोपायप्रात्यत्वं महाफलत्वं च"–प्र.हृ.टी.पृ. 44।
13. स्वेच्छया स्वभित्तौ विश्वमुन्मीलयति–वही. सू. 2
14. वे.सा.पृ. 95
15. स्वच्छद तं., 4–434, 35

❑

नरेंद्र सहगल

ऋषि-मुनियों और सूफी-संतों द्वारा सिंचित

'कश्मीरियत' है समाधान

बहुचर्चित पुस्तक 'धर्मांतरित कश्मीर' के यशस्वी लेखक, समाज सेवी एवं प्रसिद्ध पत्रकार नरेंद्र सहगल बता रहे हैं कि किस तरह कश्मीरियत और राष्ट्रीयता भी एक ही हैं किंतु पाकिस्तान से मदद लेकर जो रक्तपात हुआ वह कश्मीरियत के चेहरे पर एक काला धब्बा है।

'जर्रा-जर्रा है मेरे कश्मीर का मेहमानवाज/राह में पत्थर के टुकड़ों ने दिया पानी मुझे 'पृथ्वी पर स्वर्ग कहलाने वाले कश्मीर के एक-एक कण की प्रशंसा में लिखी गई ये पंक्तियां हैं। सचमुच कश्मीर के जर्रे-जर्रे ने सारे संसार की प्यास बुझाई हैं। इस धरती के प्रत्येक कण में संसार के प्रत्येक प्राणी की क्षुधा मिटाने की अद्भुत क्षमता विद्यमान है। इस धरती के पुत्रों ने अपने गहरे आध्यात्मिक ज्ञान से समूचे विश्व की दिशा दी, जीने का सुखद मार्ग दिखाया और अपने घर के द्वार खोल दिए पीड़ित मनुष्यों के लिए ताकि ज्ञान के भंडार सब में बांटे जा सकें। यही सच्ची कश्मीरियत थी और है।

यह कश्मीरियत भारत की गौरवशाली संस्कृति का एक अभिन्न और आवश्यक हिस्सा है। इस कश्मीरियत का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। इसे किसी एक मजहब अथवा जाति के द्वारा नहीं बनाया गया। सब का योगदान है इस कश्मीरियत में। नागपूजा मत, शैव मत, बौद्ध मत, वैष्णव मत तथा सूफीमत (इसलाम) इत्यादि। कश्मीर की धरती पर खिले फूलों ने ही कश्मीरियत में सुगंध भरी है। एक उपवन में अनेक पुष्प खिलते हैं। उनके सामूहिक अस्तित्व से ही उपवन का सौन्दर्य निखरता है। यदि कोई पुष्प अपना स्वतंत्र और भिन्न अस्तित्व घोषित करके डाली से टूटकर उपवन से बाहर चला जाए तो इससे उसका न केवल अपना ही अस्तित्व समाप्त होगा, बल्कि वह उस उपवन को तबाह करने का जिम्मेदार भी होगा।

कश्मीर की धरती पर रचा गया विश्व प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ राजतरंगिणी चार हजार वर्षों से भी अधिक समय का प्रमाणित इतिहास प्रस्तुत करता है। इसके रचनाकारों के समक्ष कश्मीर का सारा घटनाक्रम चला। यह भी अपने आप में एक विश्व कीर्तिमान है कि कोई एक ही ग्रंथ शताब्दियों तक एक के बाद एक अनेक लेखकों ने लिखा हो। कल्हण, श्रीवर और शुक ने अपने-अपने समय में इस ग्रंथ को आगे बढ़ाया। इस एतिहासिक ग्रंथ में बौद्ध, शैव, वैष्णव, पिशाच, नाग, गुहजक, भोट, शिया, सुन्नी, सैय्यद, चक्क, मुगल पठान, सिख, डोगरा इत्यादि कश्मीरी जातियों और मजहबों का योगदान है।

उल्लेखनीय है कि सभी दर्शनों से प्रभावित शासन पद्धतियों के द्वारा कश्मीर का शासन चलता रहा हैं परस्पर विरोधी तंत्रों, परस्पर विरोधी दर्शनों और परस्पर विरोधी मत मतांतरों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए कश्मीर एक पूर्ण सज्जित प्रयोगशाला है।

प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा. रघुनाथ सिंह ने कश्मीरियत के इस अद्भुत गुण को श्रीवर कृत राजतरंगिणी के अपने भाष्य में इस तरह लिखा है : 'कश्मीर में विदेशियों एवं कश्मीरियों में भेद और प्रतिभेद नहीं था। यहां के राजाओं ने विदेशियों को आश्रय दिया है। वित्त दिया, आदर दिया है। वे सब अपने धर्म के साथ, कर्म के साथ फलते रहे। किसी भी संप्रदाय के प्रति द्वेष नहीं था। दुख नहीं था। उनके व्यवहार के कारण घृणा नहीं थी। विधर्मी होने के कारण, रहन-सहन होने के कारण उनसे विरोध नहीं था,

अनादर नहीं था। कश्मीर में बौद्धमत और शैव मत चौदहवीं शताब्दी .... साथ मान्यता प्राप्त करते चले आ रहे थे। उनमें .... विरोध कभी नहीं हुआ, संघर्ष नहीं हुआ। बौद्ध संघ .... की राज्य व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं किया, षड्यंत्र .... किया, जाहिर है कि सभी मतों और मजहबों का आदर .... की वह सांस्कृतिक धरोहर है जिसे कश्मीर की सीमाओं में कश्मीरियत कहा गया है।

...सर्वविदित है कि कश्मीर घाटी में कई पंथ और मजहब जन्मे और पुष्पित पल्लवित हुए। ये सब विचारधाराएं समन्वय .... जीवन मूल्य पर ही टिक सकीं। सम्राट अशोक के समय कश्मीर में बौद्धमत का प्रचार हुआ। त्याग और अहिंसा जैसे ऊंचे सिद्धांतों पर आधारित बौद्ध विचारों का निर्माण हुआ। विश्व के अनेक देशों में कश्मीरी बौद्ध भिक्षु मानव को शांति का अमृतपान करवाने के उद्देश्य से गए। अशोक के पश्चात उसके पुत्र जलौक ने कश्मीर में शैवमत का प्रचार किया। परंतु शैव के उपासकों ने किसी बौद्ध विहार को तोड़ा नहीं। जलौक स्वयं अहिंसक था। उसने पशु वध को राजकीय आदेश से प्रतिबंधित किया।

कश्मीर की धरती पर जन्में और विकसित हुए शैव दर्शन ने पूरे भारत वर्ष को प्रभावित किया है। यही शैव दर्शन प्राचीन कश्मीरियत का आधार रहा है। कश्मीर में शैव साहित्य के विशाल भंडार आज भी मिलते हैं। इस दर्शन में मानव के संपूर्ण जीवन की कल्पना है। शिव के स्वरूप में कृषि, घर-गृहस्थी, गणतंत्र, योग, आत्मिक विकास, त्याग और समन्वय जैसे विषयों के महत्व पर जोर दिया गया है। समस्त विश्व में दुर्लभ इस वैज्ञानिक जीवन पद्धति को समझने और सीखने के लिए सारे संसार से जिज्ञासु लोग आते रहे।

इसी प्रकार चौदहवीं शताब्दी में कश्मीर में सूफी मत का आगमन हुआ। यह ठीक है कि इन सूफी संतों ने कश्मीर की जनता को इस्लाम में धर्मांतरित करने के लिए सब प्रकार के हथकंडे अपनाए परंतु इनके भी धार्मिक उपदेशों को कश्मीरी लोगों ने अपनाया। सूफी मत के अनुसार इस्लामिक जिहाद का अर्थ होता है भौतिक इच्छाओं पर नियंत्रण करके अपनी बुराइयों को हटाना और इन बुराइयों के विरुद्ध निरंतर लड़ते रहना, जद्दोजहद करना। सूफी मतानुसार रचियता अर्थात परमात्मा का कोई एक स्वरूप नहीं होता। व्यक्ति अपनी पवित्रता और चिंतन से उसके साथ अपना नाता जोड़ने में सफल हो जाता है। इन्सान परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है। सरलता और संयम, भक्ति और पवित्रता इत्यादि गुण सूफी मत की जरूरी शिक्षाएं मानी जाती हैं।

गौरतलब है कि इन सूफी संतों को कश्मीर के लोगों ने अपने महापुरुषों की श्रेणी में सम्मानजनक स्थान दिया है। यह अलग विषय है कि इन सूफी संतों के द्वारा किया गया कश्मीरी हिंदू समाज का इस्लाम में धर्मांतरण ही आज कश्मीरियत पर उभरे अलगाववादी कैंसर के रूप में रिस रहा है।

चौदहवीं शताब्दी में ही कश्मीर में प्रचलित 'ऋषि परंपरा' भी कश्मीरियत का एक ऐसा महत्वपूर्ण भाग है जिसके आध ार पर वर्तमान कश्मीरी युवकों को दिशा दी जा सकती है। हिंदू सन्यासिनी देवी लल्ल और मुसलमान संत शेख नूरुद्दीन के प्रयासों से इस महान परंपरा का जन्म हुआ। इन ऋषियों के अनुसार यदि मानव अपने अहंकार पर काबू करके अपने आप को परमात्मा के समक्ष प्रस्तुत कर दे तो जीवन के वास्तविक लक्ष्य की तुरंत अनुभूति हो सकती है।

अत्यंत खेद की बात है कि शेखनूरुद्दीन के द्वारा प्रदत्त सूफीमत के सिद्धांतों को ताक कर रख कर कश्मीर के एक समुदाय के नौजवानों ने पाकिस्तान से मदद लेकर जो रक्तपात कश्मीर की पवित्र धरती पर किया है वह कश्मीरियत के चेहरे पर एक काला धब्बा है। उल्लेखनीय है कि इसी सूफी संत शेखनूरुद्दीन की दरगाह चरारे शरीफ को पाकिस्तानी घुसपैठियों और कश्मीरी आतंकवादियों ने जला कर राख कर दिया था।

दरअसल हमारे सत्ताधारियों ने कश्मीर के मुस्लिम भाइयों को राष्ट्र की मुख्यधारा में लाने का कभी प्रयास ही नहीं किया। उन्हें किसी ने नहीं समझाया कि उनके और हिंदुओं के पुरखे एक ही हैं। इस देश और कश्मीर की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास पर उनका भी उतना ही हक है जितना हिंदुओं का। पूजा के तौर तरीके अर्थात मजहब बदल जाने से बाप दादा और उनकी संस्कृति नहीं बदल जाती। कश्मीरी मुसलमान का खून भी भारत का खून है। वे भी इस देश की मिट्टी का अभिन्न हिस्सा हैं। आज के कश्मीरी आतंकवादी हिंदू पूर्वजों की ही संतानें हैं। आखिर कश्मीरी अलगाववादी कौन-सी कश्मीरियत की बात करते हैं? पांच सौ वर्ष पुरानी या पांच हजार वर्ष पुरानी? उस समय तो सब हिन्दू धर्मावलंबी ही थे।

❑

डॉ. बदरी नारायण तिवारी
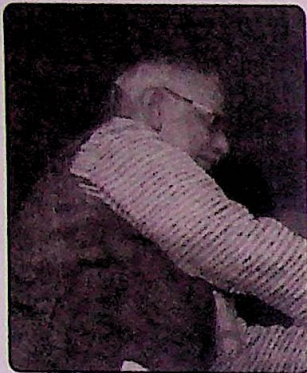
जिस एक रचना ने देश को आन्दोलित किया

स्वाधीनता आंदोलन में एक रचना में लाखों लोगों को किस प्रकार उसे गाते हुए जुलूस में आंदोलित होते रहे। कानपुर में नवलि ग्राम में सेनानी रचनाकार श्याम लाल गुप्त 'पार्षद' का जन्म 16 सितम्बर 1893 को हुआ था जननायक पं. जवाहर लाल नेहरू, पार्षद जी के गाँव जाकर कहा, कि उनकी ''झण्ड ऊँचा रहे हमारा....'' के नाम से यह गाँव हमेशा याद किया जायेगा।

यह मेरा सौभाग्य था कि अपने जनरलगंज निवास से महीने में कई बार गलियों से पैदल चलकर हमारे यहाँ आने की कृपा करते थे। तभी पार्षद जी से पुरानी घटनाओं को पूछा करते थे। उसी संदर्भ में कानपुर के स्वतंत्रता आन्दोलन के केन्द्र स्थल–''नवजीवन पुस्तकालय'' में हिन्दी युग निर्माता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में एक आयोजन हुआ था। पार्षद जी ने बताया कि उनके सम्मान में जो रचना पढ़ी थी। उसे गणेश शंकर विद्यार्थी ने काफी पसन्द किया और मुझे बधाई दी। इसके बाद विद्यार्थी जी से घनिष्ठता बढ़ती गई और उन्हीं की प्रेरणा से कांग्रेस में सम्मिलित होकर सक्रिय आन्दोलन में भाग लेकर चले जाने लगा।

पार्षद जी कारागार की सलाखों में बन्दी जीवन की अनेक घटनायें संनाते थे। 21 अगस्त 1921 को असहयोग आन्दोलन में जेल जाना पड़ा। लखनऊ जेल में राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन, पं. नेहरू जे.वी. कृपलानी तथा विद्यार्थी जी के साथ वर्षो कारगार की सलाखों में रना पड़ा। इसके अलावा आगरा की जेल में भी मुझे सेनानी लोक गीतकार पं. रामनरेश तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त आदि के सन्ध्यि में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहां इनके गीतों को सुनकर रचना लिखने की प्रेरणा भी मिलती थी। इसी प्रकार पार्षद जी की संस्मृतियों पर सुविक्ष्यात कवि बाल कवि बैरागी तथा लेखक शिव कुमार गोयल के आलेखों एवं राष्ट्र कवि पं. सोहन लाल द्वारा सम्पादित कृति–''झण्डा ऊँचा रहे हमारा'' अति चर्चित हुई।

मेरे जीवन का सबसे दुखद दिन वह था जिस दिन सन् 1925 में सर्वप्रथम देश के शीर्षस्थ नेताओं ने एक स्वर से सभी ने मंच में 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा....'' गाया था जिसमें सरोजिनी नायडू, नेहरूर जी आदि सम्मिलित थे। इसी यादगार को स्थायी बनाने हेतु ''मानस संगम'' द्वारा 1857 में ऐतिहासिक कानपुर के नानाराव पार्क में शिलालेख में यह राष्ट्रीय गीत सर्वप्रथम अंकित कराया। इसके अनावरण के समय देश के 22 क्रान्तिकारियों ने नानाराव पार्क के 'शहीद उपवन' में भाग लिया था। इसकी अध्यक्षता शहीद ए-आजम भगत सिंह के क्रान्तिकारी साथी शिव वर्मा ने किया था। इस प्रेरणास्पद ''झण्ड गीत'' की पुनः गाने की चर्चा करते हुए पार्षद जी ने बताया कि वह घटना भी मुझे भली भाँति याद है जब गुजरात के हरिपुर-कांग्रेस अधिवेशन में गाँधी जी, सुभाष चन्द्र बोस, नेहरू जी, जगदम्बा प्रसाद, ''हितैषी'' जी ने अपार जन समूह में समवेत स्वरों में एक साथ गाया था। यह मेरे

जीवन का एक स्वर्णिम दिवस था। उसी क्षण "शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले....." के रचयिता "हितैषी जी" ने मुझसे पूछा था कि इस समय आपको कैसा लग रहा है जब इतने बड़े लोग गा रहे है? पार्षद जी ने उत्तर दिया कि "आज इतने बड़े-बड़े लोग इस गीत को गा रहे हैं तो ऐसा लग रहा है कि अब कोई गाये न गाये, मुझे कोई अफसोस नहीं होगा।" इन घटनाओं को सुनाते समय पार्षद जी पुरानी स्मृतियों में डूब जाते थे।

पार्षद जी ने कुछ समय अध्यापन कार्य भी किया। तत्पश्चात् "सचिव" नामक एक पत्रिका भी निकाली जिसके मुख पृष्ठ पर उनकी पंक्तियाँ प्रकाशित होती थीं—

राम राजय की शक्ति शांति, सुखमय स्वतंत्रता लाने को
लिया 'सचिव' ने जन्म, देश की स्वतंत्रता मिटाने को॥

पार्षद जी की स्मरण शक्ति इतनी अवस्था में भी तीव्र थी उतनी ही आवाज में जिस तेवर में झण्डा गीत सुनाते थे—उनकी उस वृद्धावस्था का भान तक नहीं होता था। पार्षद जी को बचपन से ही रामचरित मानस पढ़ने तथा गाँव की रामलीला में अभिनय के शैक का वर्णन करते थे। उन्होंने "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा" झण्डा गीत का प्रेरणा स्रोत "मानस" को बताने पर मैंने उनसे तत्सम्बन्ध लेख "मानस संगम" पत्रिका में प्रकाशन हेतु मांगा, उसके प्रकाशन पर यह लेख काफी चर्चित भी हुआ था। राम कथा के सुविख्यात व्याख्याता युग तुलसी पद्मभूषण पं. राम किंकर जी की कथा मेरे यहाँ अनवरत् रूप से 33 वर्षो तक नियमित सुनने आते रहे। अनितम दिवस "मानस संगम" समारोह में देश-विदेश के विद्वानों के साथ पार्षद जी बड़ी कठिनाई से मंच पर बैठाये जाते थे।

महात्मा गाँधी के सर्वप्रथम अभिनन्दन ग्रन्थ को संपादित करने वाले राष्ट्रकवि पद्मश्री मोहन लाल द्विवेदी (जिसकी भूमिका सर्वपल्ली डा. राधा कृष्णन ने लिखी थी) की राष्ट्रीय रचनायें स्वाधीनता आन्दोलन की पंक्खियाँ भी अति चर्चित थी। उनका भी कानपुर आने पर मेरे यहाँ प्रवास करने की कृपा करते थे। एक बार द्विवेदी जी की उपस्थिति में पार्षद जी के आने पर दोनों राष्ट्र कवियों में चर्चा होने के मध्य दिल्ली की 26 जनवरी के गणतंत्र दिवस पर राजपथ के निकलने वाली शोभायात्रा की चर्चा प्रारम्भ हो गई। वह घटना थी दिल्ली में श्री लल्लन प्रसाद व्यास के यहाँ दूरदशन पर गणतंत्र दिवस के जूलूस में मध्स "झण्डा ऊँचा रहे हमारा" की प्रेरणादायी भव्य झाँकी के प्रदर्शन की होने लगी। इसी के बाद पार्षद जी के जीवित होने की बात होने लगी। तभी दिल्ली के "हिन्दुस्तान" में सुविख्यात कवि बाल कवि बैरागी का तद्विषयक भाव स्पर्शी लेख सारे देश में चर्चा का विषय हुआ। उसका शीर्षक था—"जो लगातार घाटे में रहे" प्रकाशित लेख में लिखा—"शायद यही एक "बनिया" है जो लगातार घाटे में जीता रहा और अभी जिये जा रहा है। लेकिन हम भी कितने ना देहन है। पता नहीं; पार्षद जी के काटे का हिसाब कब चुका पायेंगे।" इसके बाद ही देश के लोगों कासे उनके जीवित होने की जानकारी हुई। तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी. गिरि ने "पद्मश्री" के सम्मान से विभूषित किया था। पार्षद जी की रचनाओं पर विश्व विद्यालयों में शोधकार्य भी हुए।

अन्ततः पार्षद जी का "झण्डा ऊँचा रहे हमारा" उनकी राष्ट्रीय कीर्ति के यशोगान का नील का पत्थर बना। पार्षद जी जीवन के अन्तिम समय देश की विषय परिस्थितियों को देखकर उनकी "आत्म-चिंतन" शीर्षक में जो रचनायें प्रकाशित हुई उस व्यथा की कुछ रेखांकित पंक्तियाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

आज चिंतित हो रहा हूँ!?
देख गतिविधि देश की में मौन में हो रहा हूँ।
हो विमुख कर्तव्य से, अधिकार केवल चाहते हैं।
राष्ट्र की चिंता नहीं, व्यापार केवल चाहते हैं,
निष्प्रयोजन नाम की, झंकार केवल चाहते हैं,
देख उनके पैतरे, जगता हुआ भी तो रहा हूँ।
आज चिन्तित हो रहा हूँ।
फिर उठो ऐ देश भक्तों, फिर तुम्ही कुछ कर सकोगे,
अर्थ-संकट कही अभी लंका जलानी है तुम्हें,
कुछ यही आशा संजाये, भार जीवन ढो रहा है।
आज चिन्तित हो रहा हूँ

—आज ऐसे राष्ट्रभक्तों को हम विस्मृत कर रहे हैं जिनकी लेखनी से देश के करोड़ों कठ स्वाधीनता आन्दोलन में गूंज रहे थे।

संरक्षक मानस संगम
महाराज प्रयाण नारायण मन्दिर (शिवाला)
कानपुर—20800

❑

कहानी

–अवतार कृष्ण राज़दान

आखिरी सलाम

वह बिल्कुल सामान्य महसूस करने लगा अपितु जरूर सोचने लगा कि आज घर में इतनी चहल-पहल क्यों हैं। सगे-संबंधी और लोग झोंक-दर-झोक क्यों आ रहे हैं? एक दूसरे से ये क्या पूछ रहे हैं और इसके बाद मकान के दीवारों की ओर, कमर सटाकर, प्रतीक्षारत क्यों खड़े हो जाते हैं। पल-पल यह सिलसिला बढ़ता जा रहा हैं। मकान का आँगन लोगों से भरा हैं और अब इसके आस-पास के गली-कूचे भी भर गए हैं। उसको लगा कि बात तो कुछ दूसरी है, नहीं तो कल तक यहां चिड़िया तक पर नहीं मार सकती थीं। साफ लगता है कि ये मेरे बाप को मारने आए है। शायद उसने किसी जगह, समय के जालिमों की शनाख्त कर, उनका सफाया किया है और उसी का बदला लेने के लिए, ये यहां इक्टठे होकर, हमें मारने आए हैं इस लोक से छुटकारा दिलाने आए है। मेरे बाप को इसका पता क्यों नहीं? वह यहां पुलिस क्यों नहीं भेजता? हम तो खतरे में हैं किन्तु हमें किसी तरह अपने आपको बचाना है। यदि ये मकान को आग लगाएंगे तो हम सबों का इसी में भस्म हो जाएगा। मुझे अपनी चिन्ता नहीं किन्तु बाप ने कहा है कि मेरे बाद, अपनी मां की रखवाली करना और यदि मेरी तरह खाकी वर्दी भी पहनना पड़े, उसे हिचकना नहीं।

इस समय वह घबरा गया। उसने खिड़की में से झांक कर देखा, वहां लोग ही लोग थे। एक भारी-भीड़! धक्कमपेल! वह मन-ही-मन से तैयार रहा, यह सोचकर कि यदि स्वयं नहीं बचेगा किन्तु मां को बचाना है। वह एक बार फिर इन लोगों की और देखने लगा, जो मूक-दृष्टि से चारों और मकान की दीवारों के साथ प्रतीक्षारत खड़े थे। उसने सोचा कि शायद ये मेरे ही बाप की प्रतीक्षा में हैं कि कब आए और अपने छल-बल और कपट से उसका वध करे। मगर इनके हाथ तो खाली हैं। न इनके पास बन्दूक हैं, न छड़ी, न बम नाही पत्थर। ये मेरे बाप के विरूद्ध कोई नारा नहीं लगाते। तो फिर हमारे इस मकान की ओर एकटक क्यों देख रहे है? हो सकता है कि इनमें से किसी गुट के पास बम और बन्दूक हो और बाप को देखकर ही वह, उस पर हमला बोल देंगे और उसको हमेशा के लिए हमसे अलग कर देंगे। ये तो उसको मारने की ताक में खड़े हैं क्योंकि उसने हर समय वीरता का प्रमाण दिया है। कल से वह सबों का हीरो बन गया है जब इन्होंने आतंकियों का एक महत्वपूर्ण ठिकाना अपनी वीरता और चालाकी से तहस-नहस कर दिया है और यहां के पुलिस में एक रिकार्ड कायम किया है। आज के अखबार में उसका चित्र भी छपा है किन्तु अभी मुझे पढ़ना नहीं आता कि इसके नीचे क्या लिखा है। अभी छोटा हूं न। पिछले साल ही पहली पास किया है किन्तु अखबार पढ़ते ही मां क्यों रोती हैं? कल से वह अपने मूड में नहीं, शायद इसलिए कि कल सुबह-सवेरे हमारे घर के आमने-सामने लोग इकट्ठा हो जाएंगे और हमें मारेंगे। मकान से सामान निकालकर नीचे फेंक देंगे। अंत में मकान को जलाएंगे, जिससे हमारा भी भस्म होगा।

ऐसा क्या हो सकता है? वह जमाना गया जब खलील

खाँ फाखता उड़ाता था। मैं बाप की तरह पुलिस-कर्मी नहीं किन्तु मुझमें उन्हीं की तरह हौसला है, मैं तो जरूर मरूंगा किन्तु मैं अपने साथ कईयों को मारूंगा। किन्तु मां इस वक्त रोती हैं। समझ में नहीं आता कि इसका क्या कारण हो सकता है तिसपर भी ये जनानियां भी उसके सामने बैठकर, उसको रुलाती हैं। वे क्यों नहीं अपने घरों को जाती। इस समय यह सारा क्षेत्र खतरे में हैं। यदि हमारा मकान जलेगा तो आग की लपटों से इनके घर भी चपेट में आयेंगे। बीच में हमारा नाम लग जाएगा। सोचता हूं, क्यों न मैं बाप को टेलिफोन पर सब कुछ बताऊँ। क्या पता उसको पता है इसका? यदि उसको पता होता तो वह स्वयं यहां आते।

वह तो टेलीफोन का रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाने की कोशिश करता हैं। उसने अपनी कापी पर दो चीजे नोट की थी। एक बाप का चित्र और दूसरा उसका टेलीफोन नं. बस, इसके सिवाय इसपर कुछ नहीं लिखा था। मगर भाग्य की विडम्बना! इस समय उसको बाप के साथ संपर्क न हो सका। थाने में कोई टेलीफोन उठाता ही नहीं था। अरे, आज बाप मुझपर नाराज क्यों हैं? टेलीफोन उठाते ही वह मुझसे मां के बारे में पूछता था, मगर आज मुझे उसकी चुप्पी सालती है। शायद इस समय किसी काम में व्यस्त होंगे नहीं तो वह जरूर जवाब देता।

इतने में मामा ने कमरे में प्रवेश किया। उसकी आँखे गीली थीं। उसने उसको गोद में बिठाकर पूछा-यह क्या करते हो तुम?

मैं तो बाप को टेलीफोन करता हूं—उसने एक ही सांस में कहा।

क्यों? किसलिए?—मामा ने पूछा।

मामा की आंखों से आंसू बह निकले कहा—अरे यह कोई दुर्घटना करने नहीं आए हैं। ये तो हमारे बाप को फूलों की माला डालने, अभिनन्दन करने आए है।

मगर मेरा बाप कहाँ है? मेरी समझ में कुछ नहीं आया—उसने पूछा

वह अभी काठ के पालने में आएगा—मामा ने फिर आंसू बहाकर कहा।

क्यों? उसने क्या चूड़ियाँ पहनी है कि पालने में आएगा? वह तो मर्द है। वह तो बहादुर सिपाही है। उसने कई आतंकियों को ढेर किया है और वही क्यों पालने में आएगा? उसने कहा।

मगर आज उसको उसी में लाया जाएगा—मामा के आँसू नहीं रुकते थे।

मुझे यह कोई चाल लगती है। कहीं उसको पालने में ही, मारने की योजना तो नहीं है? इस समय उसको बुलेट-प्रूफ कार में आना चाहिए—उसने कहा।

किन्तु अब खुदा ने उसके लिए पालना बनाया है। इस समय उसको इसी में आना है—मामा ने कहा और कमरे से बाहर आ गया।

उसकी समझ में कुछ नहीं आया। आता भी कैसे? वह तो छोटा बच्चा था। ये बातें तो उसकी सोच से परे थीं। वह अपने-आपसे सोचता है कि यह मामा की ही चाल हो सकती है। एक समय वह भी था जब वह एक आतंकी था और शायद इसी के इशारे पर ये यहाँ आए हैं। यही मेरे बाप को मारना चाहता है, नहीं तो वह रोज बुलेट-प्रूफ कार में आता है और आज वह पालने में क्यों आएगा? मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। अगर उसने कोई चाल चली तो मैं उसका सिर फोड दूंगा। जो लोग उसने जमा किए हैं उनका सिर भी फोड दूंगा-पत्थरों से। मुझे बाप ने कहा हैं कि किसी से भी डरना नहीं चाहिए। जो डरता है वह मरता हैं। मैं पत्थरों को इकट्ठा करूंगा और यदि मैंने बाप को पालने में आते देखा, मैं लोगों पर पत्थर मारना शुरू कर दूंगा मैं अपने आपको भी मारूंगा किन्तु अपने साथ कईयों को मारने का शक्ति-पद्रर्शन करूंगा। मुझे पता हैं कि बाप ऐसा करने नहीं देगा। उसके पास तो बन्दूक हैं। वह तो स्वयं इनको एक-एक करके मारेगा और जहन्नुम के पहले दरवाजे तक पहुंचाएगा।

इतने में बाहर से शोर सुनाई दिया। अन्दर से चीख-पुकार और रोना-पीटना शुरू हो गया। यह देख वह हरकत में आ गया और एक बड़े पत्थर को हाथ में उठाया। मन से वह जंगे-मैदान में उतर गया, मरने और मारने के लिए। अपने चारों ओर से वह होशियारी से तकता रहा, जैसे नेवला सर्प को, या बिल्ली चूहे को खाने से पहले तकता है। कमरे की खिड़की में से उसने दूर से देखा, मगर यह डोली कही नजर नहीं आयी। अलबत्ता अस्पताल की सफेद गाड़ी या एम्बुलैंस उसके घर की ओर धीरे-धीरे आ रही थी और इसके आस-पास, लोगों का जमावड़ा था। उसके

बाप का नाम लेकर 'अमर रहे' के नारे लगाए जा रहे थे। इस तरह जबरदस्त शोर भड़ा किन्तु अब भी उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि यहां यह क्या हो रहा है। शायद बाप ने कोई अच्छा काम किया है, इसलिए हो रहा हैं। लोग मचल रहे हैं किन्तु यह चाल भी हो सकती है। बाप कहता है कि आजकल किसी पर विश्वास नहीं। इसलिए वह गाड़ी से बाहर नहीं निकलता। वह शीशें से ही देखता है कि इनमें से किसके हाथ में बन्दूक है। वह तो पहले उसी को काटेगा और इसके बाद बाहर आएगा। वह तो यही सोच रहा था कि गाड़ी का दरवाजा खोला गया। पहले तो इसमें दो-चार पुलिसकर्मी बाहर निकले। बस, इसी के साथ कोहराम मच गया। बाप का नाम लेकर 'अमर रहे' का नारा एक स्वर में गूंजने लगा। उसको फिर भी समझ में नहीं आया कि यह सब क्या हो रहा है। अंत में जब गाड़ी से ताबूत निकाला गया तो ऐसा देख, उसके हाथ से पत्थर एकदम गिर गया। कुछ पल के लिए इस ताबूत की ओर देख, वह वास्तविकता समझ गया। ताबूत उसके घर में लाया गया। इसके आस-पास पुलिसकर्मी खड़े थे। अंत में इसकी पटी खोली गयी और इसके अन्दर, उसके बाप का शव था। यह देख उसका मामा उसको आखिरी सलाम करने के लिए, कमरे में से लेने आया और रोकर कहने लगा कि आ देख ले अपने बाप को कहता था न इसको अब काठ की डोली में लायेंगे।

मगर यह सब उसने किसको कहाँ? वहां तो कोई नहीं था। यह देख मामा चिन्ता में पड़ गए। वह उसको सब जगह ढूंढने लगे। वह तो मां के पास भी नहीं था। किसी चोर जगह पर भी नहीं था। 'अरे, यह तो गया कहां? अभी तो मैंने इसको कमरे में देखा था। सबों की नजरें चुराकर, वह कहां भाग गया? इतने में शव को नहलाया गया। रस्म पालने के बाद, इसको कब्र में उतारने के लिए, कब्रिस्तान लाया गया। शव-यात्रा में हजारों लोगों ने भाग लेकर तथा अश्रु-विदाई देकर, आखिरी सलाम के तौर पर, उसके पीछे-पीछे हो लिए। अंत में कब्रिस्तान आ गया। वहां इसकी कब्र खोदने की व्यवस्था पहले ही हो चुकी थी। इसके आस-पास नेताओं और उच्चाधिकारियों का तांता लगा था। सुरक्षा कारणों के कारण लोगों को दूर रोका गया। यहां नमाजी-जनाजा पूरा होने के बाद, पुलिस की एक टुकड़ी ने हवा में गोलियां चलायी। शोक धुन बजाया गया इससे पहले एक छोटा बच्चा पुलिस की वर्दी लगाए, सिर पर टोप पहने, और हाथ में तमाशा-बन्दूक लिए, पुलिस की टुकड़ी के सामने, शव को आखिरी सलाम कर रहा था। इस समय वह ऐसा लग रहा था कि जैसे पुलिस टुकड़ी की अगुवायी कर रहा था। शव को जब कब्र में उतारा गया तो इस पर, मिटी डालने वाला आदमी तो यही था। मामा ने जब इसको पहली बार देखा, तो उसने उसको उठाकर गले लगाया। इसके बाद पूछा कि तू कहां गया था? मैं तो तुमको ढूंढ रहा था।

मैं तो वर्दी पहन रहा था। यह तो बाप ने ही बाजार से लायी थी। मैंने सोचा, यही लगाकर बाप को आखिरी सलाम करूं। बाप को किसने मारा है, उसको पकड़ना और फिर मारना, अब मेरा काम है। बाप के साथ-साथ उनकी भी आखिरी सलाम होनी चाहिए।

सम्पर्क :
मकान नं.–D-255 गली नं. 14-15
लोवर शिवनगर, जम्मू-180081
दूरभाष : 09906010078
email : avtarkrazdan@gmail.com

□

स्मृति शेष : **अवध नारायण मुद्गल**

हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार और 'सारिका' के पूर्व संपादक श्री अवध नारायण मुद्गल की लम्बी बीमारी के बाद दुखद निधन हो गया। एक अत्यन्त संवेदनशील और उदार कथाकार एवं संपादक की सहधर्मिनी सुप्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल को संगम परिवार अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए अवध नारायण जी को विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता है।

–सम्पादक

–डी.एन. गिगू 'राजकमल'

धरती का आंचल

स्व. राजकमल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद घाटी के हिंदी कवियों में अग्रणी थे और एक चित्रकार होने के साथ-साथ एक सफल प्राध्यापक भी। उनके प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप यह कविता हमें प्रो. अरविन्द गिगू के सौजन्य से प्राप्त हुई।

मेरे महबूब बचा लेना मेरी धरती के आंचल को
कि जिस धरती के माथे के सिंदूरी तिलक पर
लहर रही हैं जुल्फ घुघराली।
हमारे हर चप्पे की माटी हमारा तीर्थ है पावन
कि यह माटी सिपाही बूट की आहनी एडियों से
कहीं कुचली न जाएगी
अगर ऐसा हुआ,
तो रात को सियाही अधजली लाशों के कफलन पर
नया इतिहास लिख लेगी।
हिमाय की चट्टानों चोटियों से पार
बमों, बारूद, बंदूक और तोपों की गरज से बरसती आग
उगलती घाटियां, वादी, जमीन, लावा
तड़पती आत्मा गौतम की रोती हैं चट्टानों में
तुझे मेरी कसम है, मेरी मुहब्बत की कसम
मेरी खातिर नहीं तो 'ताज' की खातिर
जहां हर शाम को जमुना 'मुहब्बत' की गवाही में
सितारों के दीपक जलाकर कसम खाती है
इसी मजार के नीचे मुहब्बत की कहानी एक सोई है
उसी मज़ार की खातिर बचा लेना
मेरी धरती के आंचल को मेरे महबूब।
जहां पनघट पर मनमानी हसीनों की
जल भरने की लगती होड
लचकती चाल से चलती रास्तों के उतारों में,
कि जिनकी मांग से सिंदूर की रोली
डाल कर पके अनार के दाने सी टपकती है
उसी अल्हडपने के वास्ते
बचा लेना मेरी धरती के आंचल को
मेरे. महबूब।
जहां संथाल लड़कियों के सीप से चमकते दांत
हमारे लोक गीतों की कहानी हैं
पेड़ के छाओं तले जलता हुआ 'अलाव'
सोया, थका सा कारवान।
रात की खामोशियों में
नींद में करवट बदलती किसी अल्हड हसीना के झांझर
की आवाज की खातिर बचा लेना मेरी धरती को
मेरे महबूब।
दहकते आग के शोलों पर रोटी को फेरती
हाथ की खनकती चूड़ियां
सहन में पंख फैलाए मुर्ग की आवाज़ का ठहरकर
जवाब देती,
पास वाले गांव से हाथी मुर्ग की बांग
मंदिरों से शंख की आती हुई आवाज़,
जंगल में हरियाली के बीच का रास्ता
जो रास्ता महकते फूलों से खुशबूदार सीधा है
कि जैसा 'सीता' और 'यशोधरा' की मांग में
कुमकुम भरा है।
बचा लेना मेरी धरती के आंचल को मेरे महबूब
मजे से बीड़ी-सिग्रेट का कश लगाते
'शिमले' और 'कांगडा' के बाबू मिल मजदूर,
सड़क पर धूल उडाती चलती 'बसों' में
दफतर में काम करने वाली लड़कियां
हिचकोले खाती दुल्हनें
मोटरों के हारन।
सड़क के फुटपाथ पर सजा बाज़ार
कांच की नीली, गुलाबी, चूड़ियां
संगमरमर की बनी राधाकृष्ण की मूर्तियां
सरसराती साड़ियां
मंडियों का शोर
'मलाई कुल्फी' की खुशबू
टमटम, टांगे के घोड़ों की हिनहिनाहट
मस्त गाते 'ड्रायवर' की जबान से 'हरि रांझे'
के सुरीले बंद
इन्हीं के वास्ते बचा लेना, मेरी धरती के आंचल को
मेरे 'महबूब'॥

–राजदुलारी कौल

उभरता प्रश्न

जहां बुलबुल तरु की फुंगी से
नित गान सुनाया करती थीं
जहां मसत हवाएं आ आकर
हम सब का दामन भरती थीं
वह वतन हमारा हम से ही, किसने छीना, क्यों कर छीना?
जहां बहते झरनों का पानी
जीवन में रस भर देता था
जहां केसर की हंसती क्यारी
गालों में रंग भर देती थी
वह स्वर्ग हम से ही, किसने छीना, क्यों कर छीना?
जहां मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा
दिखता था वाह! प्यारा प्यारा
जहां कादिर, प्रीतम, 'औ' रोशन
पढ़ने जाते थे मिलजुल कर
हम से वह 'मदरस' मुहल्ले का, किसने छीना, क्यों कर छीना?
'कैम्पों' में रहते गरमी से सुलगे
होठों को ले लेकर बच्चे
हम बूढ़ों बालों से, प्रश्नों
का तार किया करते,
अपने कपड़े, अपने बर्तन
पशु पेड़ व अपना घर आंगन, किसने छीना, क्यों कर छीना?

हम को चुप रोते हुए पा कर
वह टेन्टों से जाते बाहर
जी भर कर गरमी से तप कर
अन्दर आते उन्मत्त हो कर
सीकर की बूंदें, माथे पर
लेकर यह 'प्रश्न' कि उनका घर, किसने छीना, क्यों कर छीना?
सुन लो बच्चों, सुन लो उत्तर
निर्दोष एवं निःशास्त्र थे हम
बेशक सरकार के भक्त थे हम
'पिरवार नियोजन' अपना कर
संख्या में रह गए कम से कम
कमज़ोर अल्प संख्यक कह कर
गोली बारूद के नोकों पर
प्यारे बच्चों! हत्यारों ने
सरकार को सोया हुआ पा कर
छीना तुमसे तुम्हारी ही
कश्मीर का सुखमय घर आंगन
कश्मीर का सुखमय घर आंगबन।

पूर्व प्रिंसिपल केन्द्रीय विद्यालय, जम्मू
–'गीतांजलि', पठानकोट एवं
वसुन्धरा एनक्लेव, दिल्ली-110096
मो. 09718104555

–महाराज कृष्ण भरत

ज़ोजिला के इस पार

मैं क्यों फंका गया
राजधानी से
इन खण्डहरों/नंगे पहाड़ों
नीरव पल्ली/सूखी वादियों में
जहां धरती मां की मखमली चादर
पेड़ों के झुरमुट
सांय-सांय करती लहलहाती
असंख्य खेतों की हरियाली
कोई लील गया,
जहां 'खतक' उड़ान तो भरते हैं
दूर-दूर तक परिन्दों की कई नस्लें गायब हैं
जिन्दगी भेर होते ही भेड़ों के चरहाने
शाम गए पानी के 'कूपू' ढोते-ढोते भी
नहीं थमती
जहां 'सत्तू' और 'योस'[1]
किसी जायकेदार पदार्थ से कम नहीं
'खौलक' बेसन के लड्डू हैं
और 'लाचू' इमली का प्रतिरूप।
'गुडगुड़ी नमकीन चाय'
एक अनिवार प्रथा है
भरा थरमंस
यहां केवल एक कप के बराबर है
पी जाता है हर व्यक्ति
कोल्ड ड्रिंक्स की तरह।

नए वर्ष के आगमन पर
जलाए जाते हैं
लोसर के दीये
पदमा, पासंग और सकलज़न
सहेलियों के साथ
मातृभाषा की लोक धुनों में रमकर
आनन्द विभोर हो उठती हैं
थिरक उठते हैं पांव
'यरज़स-यरज़स ज़ेर ते'[2] की धुनों पर–
पुनसोक, यंगडोल और तनज़िन के
और 'अली यतो वा'[3] की जवान धुनों पर
नाचने को विवश हो उठते हैं–
सेवांग दुर्जे, एसकरमा जुंगले और लोन साहब।

अभी घुटनों के बल चल रहा बच्चा भी
अपनी तुतलाहट में
गा उठता है–
'निश्रु चंगा वा।''[4]
किसी 'फूलों के मेले' में
सांस्कृतिक नृत्य और पारम्परिक पोशाक में–
महिलाएं
जैसे नाग जाति का जमावड़ा हो,
गोंचा पहने आंचुक और एन टी मुरुथ
अपनी धुनों में मग्न है।

जहां ज़िन्दगी
पहाड़ की सीधी चढ़ाई चढ़ना है
प्रवाह के रुख के खिलाफ
संघर्ष करना है
शीत में आदेश पालना है
सिविल कर्फ्यू का
शीलंग के ताप से अपने को
तपाना है।
जहां देश का रास्ता
छह महीने तक कटा रहता है
फिर भी
अब मैं यहां से
जाना नहीं चाहता?

(स्थान, बाखा, मूलबेक करगिल (लद्दाख)

संदर्भ-सूचि

1. गेहूं के भुने हुए दाने। 2. यरज़स अर्थात् प्रगति। प्रगति के बारे में लिखा गीत। 3. जंसकार का आधुनिक लोक गीत। ''अली साथी रे'' 4. पच्चीस संख्या
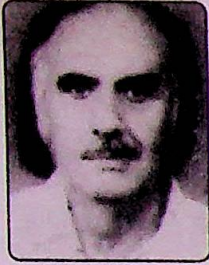
–दीनानाथ कौल 'नादिम'

युगकवि पं. दीनानाथ कौल नादिम जन्मशताब्दी के अवसर पर (जन्म फाल्गुण शुक्ल दशमी (16 मार्च 1916) तथा निर्वाण 7 अप्रैल 1988) पर हमारी स्मृत्यांजलि।

सोन वतन

मूल कश्मीर

सोन वतन पोश ह्यू
तार्वु हो'त यावुन बहारुक शालमऽरुक गोश ह्यू
मोसमन हुंद जोश ह्यू
नवि पो'शाकुक बोश ह्यू
सोन वतन लोलुं न्यायन हुंद शिहुल सरपोश ह्यू
फो'लुवुनुय पम्पोश ह्यू
असि वतन गुलज़ार ह्यू
ज़ान बुथिस गिंद्य गिंद्य छु खो'तमुत लालुंनुय बज़्ज़ार ह्यू
तोशिवुन सबज़ार ह्यू
सोन वतन नवजवाऽनी हुंद वुशुन खुमार ह्यू
बालॅपानुक यार ह्यू
असि वतन अ'छ गाश ह्यू
कोरि माऽलिस दजि गंडिथ ज़न पार्से सो'नुंची चाश ह्यू
पूरॅ गछ़ॅवुंञ्र आश ह्यू
दो'द चवुन प्रागाश ह्यू
गामुं मो'ज़रेनि ज़न मंगिथ ओ'नमुत अं'छन हुंद गाश ह्यू
यावनुंच गिंदॅबाशि ह्यू
असि वतन रूत गाम ह्यू
थल रूविथ ज़न बोनि शीहलिस ग्रीसतिस आराम ह्यू
डल दहिस प्यठ शाम ह्यू
आदनुक बादाम ह्यू
त्रेलुं ह्यथ ज़न गामुं प्यठुं यच कऽल्य वो'थमुत माम ह्यू
माजि हुंद मो'मॅ दाम ह्यू

असि वतन जामवार ह्यू
ओ'गजि पुच़्निथ सॅच़्नि तंलॅ को'ड़ टो'पॅगरूयव गुलज़ार ह्यू
रीशमुक अंज़ल वार ह्यू तोसॅ अंजल वारह्यू
डूञ्र हचि प्यठ त्वरकॅ छानन खो'नमुत ज़न लोकॅचार ह्यू
आसनुक आमार ह्यू
अ'स्य अमिक छी राऽछदर
अऽस्य ज़ेमिक्य प्रूंछुंक्य, लदाखुंक्य
बे'यि छि काऽशिर्य रुत्य गबर
अऽस्य छि वतनुंक्य राऽछदर
साऽञ्र हूयमत अथ सिपर
कस छु जूरथ ज़िंदगी सूॅत्य मेनि तॅय कुस अनि जिगर
अस्य छि वतनुंक्य राऽछदर
लल द्यदि हॅंज़ आवाज़ ह्यथ
हबॅखोतूनि ललॅनोव युस लो'लि अंदर सुय साज़ ह्यथ
ज़िंदगी हुंद राज़ ह्यथ
हबॅखोतूनि ललॅनोव युस लो'लि अंदर सुय साज़ ह्यथ
ज़िंदगी हुंद राज़ ह्यथ
अस्य छि अज़ नो'व साज़ ह्यथ
सोंतॅवावुक बोलॅवुन ख्वश मो'दुर अंदाज़ ह्यथ
अस्य छि अज़ नो'व साज़ हाथ

–हरिवंश राय बच्चन

हिन्दी भावानुवाद

हमारा वतन
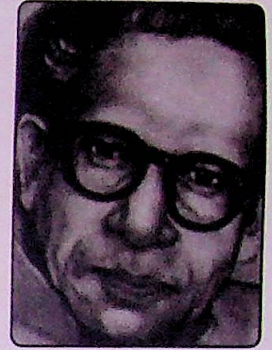
वतन हमारा एक विहंसता फूल है,
वह बहार है जिसपर जोबन आ गया,
शालिमार है जो फूलों से छा गया,
खुशी, कि जो देती तन को जामा नया,
वहां कमलों से निकलती हुई सुगन्ध है,
उसके दिल में प्रेम कहानी बन्द है,
यौवन की वह पहली प्यारी भूल है;
वतन हमारा एक विहंसता फूल है।

वतन हमारा महकदार गुलजार है,
खिलते फूलों के गालों सा लाल है,
बचपन की मुस्कानों सा खुशहाल है,
अभी-अभी जो फूट पड़ा वह गीत है,
नौजवान के पागल मन की प्रीत है,
वतन हमारा बालपने का यार है;
वतन हमारा महकदार गुलजार है।

वतन हमारा है आंखों की रोशनी,
बर-खोजी बाबुल का सोने का डला,
ऊषा की नवज्योति की यौवन की कला,
गोद लिया बन्ध्या का बेटा लाड़ला,
वह आशा जो पूरी होने को बनी;
वतन हमारा है आंखों की रोशनी।

वतन हमारा एक सुनहरा गांव है,
थके मुसाफिर को चिनार की छांव है,
डलके तट पर उतरी सुन्दर शाम है,
फल पेड़ पर वह पहला बादाम है,
फल मेवों की टोकरियां लाने वाले
मामा जी के आने का पैगाम है
मां के आँचल में ममता का भाव है;
वतन हमारा एक सुनहरा गाँव है।

वतन हमारा जैसे जामावार है,
चतुर सुई से कढ़ी केसरी क्यारियाँ
कोमल जैसे हों रेशम की सारियाँ,
तूश कि जिस पर गली रूपहली धारियाँ,
खुदी लड़कियों पर बचपन की मूरतें,
हुई न जिनके मन की, ऐसी सूरतें;
वतन हमारा इन सबका आकार है;
वतन हमारा जैसे जामावार है।

हम अपनी धरती के पहरेदार हैं,
जम्मू, पूंछ, लद्दाख और कश्मीर के,
हम जो कहलाते हैं बेटे वीर के,
डाल हमारी हिम्मत, बल तलवार हैं,
कुन्द न होती जिसकी पैनी धार है,
कहीं जिंदगी ने भी मानी हार है,
इसके मुंह लगना बिल्कुल बेकार है,
हम सब लड़ने मरने को तैयार हैं;
हम अपनी धरती के पहरेदार हैं।

शब्द लल्ल के साथ हमारे आज हैं,
हब्बा-खातूं की छाती की तान भी,
जीवन का जो भेद बताये, ज्ञान भी,
नए हमारे कंठस्थल में राग हैं,
नयी बहारों से लहराते बाग हैं,
हाथ हमारे आज नये ही साज़ हैं;
शब्द लल्ल के साथ हमारे आज हैं।

एक नया आदर्श हमारे पास है,
हमने भारत भर का पाया प्यार है,
मिली वितस्ता से गंगा की धार है,
सत्य और संकल्प हमारा एक है, हिम
गिरि के घन तुहिन कणों की छांव में,
आज हमारी मिट्टी का अभिषेक है,
आज प्रेम के सागर में उललास है;
एक नया आदर्श हमारे पास है।
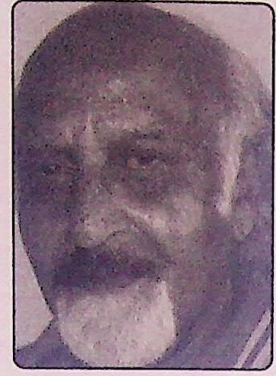
अरिञिमाल के गीत

भावानुवाद-डॉ. शशिशेखर तोषखानी

कश्मीरी साहित्य के काव्य-गगन में जिन आदि तारिकाओं ने लोक मानस को मोह लिया, जिनकी रसवती वेदनापूर्ण वाणी में जनता के दिलों में सदा-सर्वदा के लिए अपनी जगह बना ली और जिनकी विरह-वेदना के गीत प्रेम दीवानी मीरा के गीतों की तरह भाषा माधुर्य, सौष्ठव तथा भाव-गम्भीरता की दृष्टि से अनुपम हैं उन्हीं प्रमुख कयित्रयों में अरिञिमाल की गिनती है।

हर्ष की बात है कि कश्मीर के सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि डॉ. शशिशेखर तोषखानी ने इन गीतों का भावानुवाद सरल काव्य में प्रस्तुत किया है जिसमें बाहरी जगत अरिञिमाल के गीतों से परिचित हो सकेगा।

मूल कश्मीरी

1

अगन गगन गयि गगरायि,
नभ मंज नार बुज़मल द्रायि,
अन्तन पी, अन्तन पी!
आंगन सानि फोजमच ही,
चठिथ लागस शेरि,
अन्तन पी, अन्तन पी!

2

चमकानप ओब्र तल बुज़मल ज़न द्राव
आयि ग्रायि छायि गटि करान ज़न आव
डोठ फोल किथ रूद नब, नार मारान
गगराय करान चोल ज़न वाव।
नेह छटि अनि गटि मशनस शामन,
म्य बालि थोवनम् सुय आम ताव।

3

हा वलो! मोनि हो वन्दयो पादन,

भावानुवाद

1

सजनि! गगन में हो रहा है घन-चर्जन घेर री!
नभ से निकल रही उल्काएं लपटों सी सब ओर री,
सखि! पी को लाओ री, लाओ सखि पी को,
अंगना मेरे 'ही' फूलों की फूली मधुर कतार री,
पहना उनका मुकुट, पिया का मैं सिगार री।
सखि पी को लाओ री, आओ सखि पी को!

2

नभ का क्रोधानल बरसाते वर्षोत्पल से आ गए,
गए कि गन-गर्जन-युत अति भीषण तूफान मचा गए,
छोड़ अकेली गम की तम की सहने तीखी मार को,
मुझ बाला का विरहानल से कोमल हृदय जला गए।

3

चरण पर तेरे नयन के तारकों को बार दूँगी,
प्राण आ जाओ! कि यौवन-गति मेरे, आज आओ।
खेल कर आभूषणों से मदिर तरुणाई गंवाई,
मूल्य यौवन का समझ कुछ भी न, मैं नादान, पाई।
किन्तु अब तो हूं तरसती मैं, दरस अपने दिखाओ,
प्राण आ जाओ! कि यौवन-मीत मेरे, आज आओ।

आदन बाजि म्यानि यारो वे।
आदन ओसस रेंज़ल नादान,
यावनस कदर नो ज़ोनी म्ये।
दितमो दर्शुन छम चान्य लादन
आदम बाजि म्यानि यारो।
कुकिले परय कन त्राविथ कोलरादन,
दुकले वोन्द भ्योन गव।
म्य कले चानि ब्रोन्त्य गामो नादन,
आदन बाजि म्यानि यारो वे।
चन्तो, लद्रि पोश फोल्य कोल रादन,
अज़ छुम आदन वातहमय
दिहमय दर्शुन सर वन्दय पादन,
आदन बाजि म्यानि यारो वे।

4

अद् कर इयम तय?
बरसय मलर्यव मलर्यव!
चेयिना सन मस चाविना सन मस?
कमि सोनि होवनस तन?
कोल्य हय बुहुव नम–
प्यठ संगरन!
हलि छुसि खँजर तय,
तीर हय लोयनम
पोशि पँजरन!

5

हा चाल व्यसि ब ति नय चालय
हालय हालय अन्यतोन यार!
लोलकि बाज़ार नियनम डालय
मस च्यत यार यूर्य अन्यतोन!
उल्फ़त वजिनस जुल्फ त खालय
हालय हालय अन्यतोन यार!

तुम चंचल 'कुकिल' से पार सोतों के उड़े प्रिय,
मैं भटकती ही रही, भ्रम भंवर में मेरा फंसा हिय।
प्यार का धोखा : सुनी आवाज जैसे तुम बुलाओ,
प्राण आ जाओ! कि यौवन-मति मेरे आज आओ।
फूल लद्रों के नदी–तीरे खिले हैं, प्राण, देखो,
इस मदिर-क्षण आ मिलो, हैं मचलते अरमान देखो।
पाद–युग्मों पर रखूंगी शीश जो दर्शन दिखाओ,
प्राण आ जाओ! कि यौवन–मीत मेरे, आज आओ,

4

कब आयेंगे प्राण?
भरूगी मैं प्याले पर प्याला!
क्या न पियेंगे?
मुझे पिलायेंगे न प्रणय ही हाला!
शैल श्रृंग पर कल कितने विष-भरे शब्द वे बोले!
किस पर मोहे?
किस बाला के सम्मोहन में डोले?
आह्! कमर में लिए कटारी चलते हैं वे भले!
प्रण्य-शरों बींध हमारे कुसुम-वक्ष को डाला!
अब आयेंगे नहीं?
भरूँ जो मैं प्याले पर प्याला!
क्या न पियेंगे?
मुझे पिलायेंगे न प्रलय की हाला?

5

कब तक सहूँ? कहाँ तक झेलूँ!
अब न सहा जाता!
जल्दी उन्हें बुला लाओ सखि!
अब न रहा जाता!
सखी री, अब न सहा जाता!
मधुर प्रणय-बाज़ार बीच सखि,
(पुलकों के संसार बीच सखि)
छोड़ गए हैं मुझे अकेला–
वे मधुपायी, कर अवहेला!
सखि जाओ। उनको लौटाओ
उनके सुन्दर अलक-जाल में,
तिल से शोभित मृदुल गाल में,
प्यार-प्रणय मेरे इस उर को पल-पल समझाता!
सखी री, अब न रहा जाता!

–पृथ्वीनाथ कौल 'सायिल'

मॅत्य सुंद दोप

कहा मस्ताना ने

वास्तविक रूप से इस रचना में कश्मीर घाटी से पलायन करने पर बेघर हुए अपनी जन्मभूमि स्र्वगापुरी कश्मीर से उजड़े हुए लोगों की दुर्दशा के दृश्य, घर घर शरणार्थी बनकर पीड़ित कश्मीरियों की आहों तथा ठण्डी लम्बी सांसों से मन विचलित होकर सांकेतिक रूप से सारा दुखड़ा इस विलाप तथा संकेतों से पूर्ण रचना में। मन के भीतरी पीड़ा की वर्णना एक संत मलंग के ज़ुबानी नाटकी रूपांतर में चित्रित की गई है। ब्रमिज आमतौर पर मकबरों, शमशानों पर उगाया जाने वाला पेड़ है। आतंकी आक्रमनों से भयबीत हुए अपने देश तथा पूर्वजों की पवित्र भूमि के वियोग में भटके हुए लोगों की कठिनाइयाँ तथा जान के लाले एक दूसरे से बिछुड़ कर देश विदेश में ठिकानों की तलाश में। अपनी चल तथा अचल सम्पत्ति को छोड़ खाली हाथ क्या क्या नहीं भुगत रहे हैं। उसी का चित्रन है इस रचना का मूल रूप।

असली बाशिंदों को किस प्रकार जलायवतन किया गया। उन ही दुखी लोगों के दिल से निकली आहों को शब्दों से आभूषित करके किस प्रकार उनकी पुकार उनके विलाप, उनकी अश्रुधारायें, उनके हताश अरमान, ढंग से समोये गए हैं। यह रचना इन सब चीज़ों की प्रतीक है। आतंकवाद की ज़द में निर्दोष, शांति प्रेमी तथ सीधे सादे लोगों की नाना प्रकार की असुविधाओं, मुसीबतों, का चलचित्र किसके दिल को दहलाने वाला नहीं है। दर्वेश मृतकों की गिनती करता है। दुष्टों तथा दुषकर्मियों के नाच नगमों, तथा खून की होली खेलने वालों को अपनी बावरी बातों में सब कुछ बताता है और साथ ही इस अत्याचार के परिणाम का संकेत भी देता है। क्योंकि वह सब कुछ खुलम खुला बताने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करता है।

मॅत्य सुंद दोप : ग़ज़ल

मूल कश्मीरी

ब्रमजि कुजा दर्वेशन ॲक्य़् रुव
हलमव हलमव द्युतनस सग
वुठफिसरायि मंज़्य़् कॅन्य शेछ कॅरनस
ओंगजव होवनस अख, ज़ त त्रे
नेरान नेरान ओसुस हावान
अंछॅव त खोरयव करान बांद बांद

(अख)

ब्रमजि कुजी आव मोत यावुन ज़न
काड कोडुन लंग लंजि फॅलहेयंस
च़नि फोलाह अख अधस रटिथ तॅम्य़्
लंगस ऑकिस हाल तुलिथ ह्योत लेखुन
कति ताम किन्य़् दिच़ दर्वेशन क्रख

माहरेनि महाराज़ यिन वॅडरावन
त्युथ व्यथ हवायि रॅदी यथ शहरस
मर गुज़ारन लाग बिर, बार
यिय नेर्यखबस नीच्नन मुराद
अथि मा यिनखय होंज़ तय राद
खबर यिमन छा पकू व्वला हो
बे खबरन अॅस्य् तारव बॉज़्य्
बॉज़ी गरसय बॉज़्य गरस छय
पत दियि बुथि बुथि येलि सुय गछि
ब्रमजी ह्यस रोज़ थॅव्यूज़ि शुमारंलछि

(ज़)

लंग लंजव पत आवरोव ओंदपोख
मर गुज़ारस फ्यूर शेहजार
हुत्यू किन्यू दर्वेशन ध्युत् आलब
ब्रमजी! यिन शुहुल करनस पॅत्ययिख
लंजि रठ वॅटिथ-मॅटिथ खोच़ गुटल्यन
यिम कस पच्यूमत्य यिम ह्यन त्राश
च़ाव प्रकच़ शैतान इन्सानस।
आबय अॅछन मंज़ तस मा रूद
तेलि युस मरिनय अन्दर बसान ओस
सुय इन्सान कति साय व्वन्यू मूद
यथ लबरस तलकनि जाया रठ
डाय कदम गछ़नय नाबूद
ग्वड बरॉय यड बॅरिथ गॅयि ब्रमजे
त होववुन नॅनिरिथ पनुन जहार
रख पंज़िनय मंज़ क्याह ताम ल्यूखुन
कथ कथ तामथ कोरुन शुमार

(त्रे)

व्वन्य न ब्रमजि कुज, व्वन्य, ब्रनाह थोद
गसबॉह कॅर्य-कॅर्य सख पोठ्योमुत
मज़ार म्वंजन फोल्यूमत्य् किमशुक्यूपोश
ख्वश व्यय मा छख नाहकय बोश
ज़्युन म्योन लगिमा ज़ालन्य् कारस
ऑसस यॅहय अपज़य शानशूकी
च़कि ना ज़ड मोंड गॅटल्यन न वॉकफ
कलवॅत्र्यव सत्य् गनि गनि करनॅस
छूवटि टक फालविथ तोंदरस बरनस
कमि ताम अन्द गयि क्रख दर्वेशिन्य्
ब्रन व्वन्य् कोताह फॉन्फलख हद रठ
यिन व्वन्य् ठॅल्य् ठॅल्य लंग लंजि च़टनय
हद युस डलि तस कुनि न अंजामय
ज़्यूत वोतरिस मा चर्ब चे खोतमत
मॅशरथमा च़ेय त्रेयिमकथं गॅज़रुनं त्रोवुथ
पीर्यन कुन वुछ लूक्य् बैड्य् कॉत्याह
च़ायि मज़ारस, कत्यून दाह लोग
ज़्चन छुयिं फेरान सन च़ शुमारस
ऑखर मेति-च़ेति प्रथ कॉन्सि यी बनि
अव किन्य् दोपमय ज़ागुन सोम्वरुन
मनसाव पूर, लव सारिस कर बर पूर
सोम्बरख योदवय गड़ कर सवाबन
हकदारन हक मुछिरुन त्राव
कथ छय यिम त्रेय यिम पलि पाव
मॅत्य् सुंद दोप छुय थोप बलायन
छुख योद गाटुल च़्यतसय थाव
मॅत्यसंज़ कथ मो ज़ांह मॅशराव

पण्डित की परिभाषा

आत्मज्ञानं समारम्भश्स्तितिक्षा धर्म नित्यता।
यमर्थान्नाप कर्षन्ति सवै पण्डित उच्यते॥

आत्म ज्ञान, कार्यों में उद्योगशीलता, सहनशीलता और धर्म में स्थिरता–ये सब गुण जिसको उसके उद्देश्य से विचलित नहीं करते, वही वास्तव में पण्डित कहलाता है।

–महाभारत (उद्योग पर्व 3/15)

डॉ. ए. एन. प्रशान्त

मर्मान्तक टीस, विस्थापन की

ग़ज़ल

कश्मीरी

वाव खबराह अन ततिच
यैति म्यै सुय शैहजार रोव,
ग्रिष्म चंजिवय सूर कौरहम
यथ रौयस वौज़जार रोव।
द्रोत कॅम्य दूयुत बॉय बंदतिस
कॅम्य यि कैन्य शैछ वैन्य कॅमिस,
भॉइचारस क़फ़न वॅलिथ्य
कॅम्य सना मंज़ कब्रि सोव।
कछ चटान श्रैष्यवॉर वुछतोन
हाय कम गन्दर म्यै रॉव्य,
माजि हॅज़िं कौछि मंज़ म्यै ब्सनुक
तॅत्य पनुन अरमान त्रोव।
कॅम्य दुयीहुन्द नार दिथ
चूरि दुयीहुन्द नार दिथ
चूरि नियि अज़ पॉर्यज़ान,
अॅस्य ततिक्य बसकीन यैति
ललि ह्यौन्द-मुसलमान शीर-चोव।
काव लॉगिथ आव कुसताम
करनि म्यै सुत्य खॉर पाठ,
धार लॅज चैश्मन म्यै यामथ
तस पनुन अवहाल बोव।
बायि म्यान्या क्याह वनय
अरज़थ त प्रज़नथ कॅम्य नियम,
सुति सपुद ओज़ुर्द यामथ
तस पनुन अवहाल बोव।
बायि म्यान्या क्याह वनय
अरज़थ त प्रज़नथ कॅम्य नियम,
सुति सपुद ओज़ुर्द यामथ
तस म्यै दिलकुय दाग़ होव।
वख छु बदलावान बुथ
गाहे शुहुल गाहे तत्रर,
हे 'प्रशान्तन' थोव रॅछरिथ
कॉसिं मा अज़ताम बोव।

हिन्दी रूपान्तर

हे पावन! वहाँ का कोई संदेसा ला
जहाँ मेरी वह शीतल छाँह खो गई,
ग्रीष्म थपेड़ों ने राखकर डाला
इस मुख की लालिमा खो गई।
बंधुत्व पर कुठारघात किया किसने
अंदर की यह बात किस से कही किसने,
भाई चारे को क़फ़नाकर
क़ब्र में दफ़नाया किसने।
देख ऋषि-वाटिका छाती पीटती
हाय कितने शूरवीर हूँ खो चुकी,
माँ की गोद में बसने की
लालसा अपनी वहीं छोड़ दी।
अलगाव की आग लगा दी किसने
आपसी पहचान को ही हर लिया,
हम वहाँ के हैं निवासी, जहाँ
हिन्दू-मुस्लिम ने ललेश्वरी से क्षीर पिया।
कागा बनकर कोई याया
मेरा कुशल पूछने बैठा,
नयनों से झड़ी लगी, ज्यों
मैं ने अपना हाल सुनाया।
मेरे भाई! मैं क्या कहूँ
परिचय और पूँजी किसने लूटी
वह भी व्यथित हुआ बेचारा
जब दिल की मैं ने चोट दिखाई
काल बदलता रहता चेहरा
धूप कभी तो कभी है छाया,
हे 'प्रशान्त' ने संजोये रखा
कही न अपना हाल सुनाया

– **हिन्दी रूपान्तर स्वयं कवि द्वारा**

प्रो. डा. किश्वर सुल्ताना

समीक्षा

सद्गुरू की शब्द सेनाएँ लड़ रही हैं : मेरी नज़र में

'सद्गुरू की शब्द सेनायें लड़ रही हैं' पुस्तक डा. बद्रीनारायण तिवारी के सम्पादकत्व में मानस संगम द्वारा प्रकाशित हुई है। उक्त शीर्षक डा. विवेकी राय द्वारा लिखित एक वृहद आलेख है जो पुस्तक में शामिल है। मैं श्रद्धेय डा. बद्रीनारायण तिवारी जी के आदेश और सद्प्रेरणा से इस पर कुछ लिखने के लिये प्रयासरत हुई हूँ। आशा करती हूँ मेरे अध्ययन मनन को गहनता और गरिमा प्राप्त होगी। डा. विवेकी राय जी का सन्निध्य और स्नेह प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे अपने ग़ाज़ीपुर प्रवास काल में प्राप्त हुआ था। उनका विनोदी स्वभाव चिरस्मरणीय है। उन्होंने अपने इस दीर्घ आलेख में शब्द की शक्ति पर ज़ोर देते हुए मध्यकाल की उथल-पुथल और उस समय समाज में व्याप्त बुराइयों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा है कि सद्गुरू रामानन्द का अवतार समाज में सत्परिवर्तन लाने के लिये हुआ, वे कहते हैं :

''रामभक्ति के प्रथम आचार्य होने के साथ-साथ वे संकटग्रस्त सनातन धर्म, भारतीय परम्पराओं और सामाजिक जीवन जैसे क्षेत्रों में एक सम्पूर्ण क्रांति के अवदान के साथ अवतरित हुए। समरसता और सद्भाव के शिखरों को स्पर्श करती सद्धर्म की ध्वजा फहराते हुए वे सामाजिक जीवन को नरक बनाती जर्जर रूढ़ियों, संकीर्णताओं, कुरीतियों, अंधविश्वासों और पारम्परिक विद्वेषादि के विरुद्ध षड्ग्रहस्त दीखे।'' (पृ. 7)

डा. विवेकी राय जी का मानना है कि सद्गुरू रामानन्द की मानवता की शब्द सेना ने समाज में मानवता का सन्देश दिया। वे कहते हैं :

''शास्त्र और रूढ़ सनातन धर्म की सुदृढ़ प्राचीरों से घिरा ब्राह्मणवादी परम्परा का दुर्ग अति दुर्गम था।.... उसका द्वार सबके लिये मुक्त कर देना महान साहस का कार्य था। इसी साहस की संकल्प-सिद्धि थी कि स्वामी रामानन्द के सभी शिष्य छोटी, नीच, अस्पृश्य और अन्तज्य कोटि के अंतर्गत आने वाले थे।'' (पृ. 11)

उस समय के समाज में समरसता का एक ऐसा पुष्ट परिवेश बना जिसमें हिन्दु तो जागृत हुआ ही हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य भी बढ़ा। इस तरह साम्प्रदायिक सद्भाव की भूमि तैयार हुई जोकि एक पुष्ट और दृढ़ राष्ट्र के लिये ज़रूरी थी।

अपने सम्पूर्ण आलेख में लेखक ने अनेकानेक संत कवियों का हवाला देते हुए यह सिद्ध किया है कि इन सभी ने मात्र मानव और मानवतावाद की बात की है। वे कहते हैं :

''निरर्थक रूढ़ियों, बाह्यचारों के अर्थहीन बन्धनों से निकाल शुद्ध आत्मस्वरूप की पहचान कराने में भारत के भक्तों और संतों की मूल्यवान भूमिका रही।'' (पृ. 17)

उक्त मूल्यवान लेख पुस्तकाकार रूप में संगृहीत हो संग्रहणीय हो गया। इसके लिये डा. बद्रीनारायण जी को साधुवाद। ऐसी गुण ग्राहकता जब तक मानव समाज को मिलती रहेगी, अनेक बहुमूल्य रत्न रचना रूप में हमें प्राप्त होते रहेंगे।

पुस्तक का दूसरा आलेख 'कश्मीरी में रामकथा' डा. बीना बुदकी का है। इस लघु आलेख में उन्होंने कश्मीरी भाषा में रामकथा और रामायणों की सूची प्रस्तुत की है। जिन रामायण पाण्डुलिपियों का उल्लेख उन्होंने किया है वे शोध की दृष्टि से इस प्रकार महत्त्वपूर्ण हैं कि यदि इन पर शोध कार्य नहीं हुआ है तो कराया जाना चाहिये साथ ही तुलनात्मक अध्ययन भी साहित्य की दृष्टि से अच्छा होगा।

तीसरा आलेख 'अद्भुत पाण्डुलिपियाँ' है। यह आलेख स्वयं मेरे द्वारा लिखा गया है। इसके माध्यम से मेरा यह प्रयास है कि रामपुर रज़ा लाइब्रेरी की समृद्ध धरोहर में से कुछ ऐसी पाण्डुलिपियों को प्रकाश में लाना जिन्हें सामान्य जन-मानस और शोधार्थी न जानता हो। मेरे इस प्रयास से शोध की दिशा में नये रास्ते खुलें ऐसी मुझे आशा है।

चौथा लेख 'शहीद की रोमांचकारी आत्मकथा के शब्द बाण' जो फांसी के पूर्व कैसे जेल से बाहर आये है। यह लेख शहीद पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्मकथा से संबंधित है। उन्हें 19 दिसम्बर 1927 को फांसी दे दी गई थी। उन्होंने अपनी आत्मकथा गोरखपुर में जेल की अपनी कोठरी में लिखी थी और फांसी के तीन रोज़ पहले पूरी की थी। अपनी माँ और मित्र के सहारे इसकी पाण्डुलिपि खाने के डिब्बे में छिपा कर उसे बाहर निकालने में सफल हुए थे। आलेख के इस अंश को पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और हृदय उस बलिदानी के प्रति नत मस्तक होता हुआ नमन करता है। अंतिम क्षणों में उस जांबाज़ शहीद की क़लम से कितने सुन्दर शब्द निःसृत हुए :

महसूस हो रहे हैं बादे फ़ना के झोंके।
खुलने लगे हैं मुझ पर असरार ज़िन्दगी के॥

उन्हें अपना पूर्ण जीवन जीने और अनुकूल परिस्थितियाँ मिलती तो न जाने उनकी क़लम से कितना साहित्य लिखा जाता।

पाँचवां आलेख 'कविवर अलीशेर का निराला काव्य : मर्यादा पुरुषोत्तम राम' डा. निज़ामुद्दीन द्वारा लिखित है। इस लेख में अलीशेर द्वारा लिखित राम काव्य की चर्चा की है। कवि ने इसे धनाक्षरी, दोहा आदि छन्दों में लिखा है। राम के प्रति यह कवि की आस्था और श्रद्धा है कि उसने अपने खण्ड काव्य में रामकथा के अनेक प्रसंगों को रस-सिद्ध कविता में उकेर कर नये ढंग से प्रस्तुत किया है। जैसे सीता-वनवास के समय उनकी सास व भाइयों की पत्नियों के हृदय का दुःख कौशलया के उद्‌गार में व्यंजित है :

अश्रुओं का हार था, हिचकियों का तार था
जगत कारगार था, क्या हुआ?
जन्म से अभागिनी। बनी सन्यासिनी! आज प्रवासिनी।
विधि द्वारा त्रासिनी।
कष्ट समूह अपार था, विपत्ति पारावार था।

कवि अलिशेर की यह कृति निश्चय ही हिन्दी साहित्य की अन्यतम कृतियों में स्थान पाने योग्य है। पुस्तक का अन्तिम आलेख डा. बद्रीनारायण तिवारी जी का 'परेशान है गंगा' है। गंगा नदी भारतवर्ष की वह पावन सलिला है जिसे भारतवासी माँ समान पूजते आ रहे हैं। इसके तट पर बसे लगभग सभी शहर तीर्थ हैं। प्रयाग में संगम तट का 'कुंभ' विश्व प्रसिद्ध गंगा स्नान है। डा. बद्रीनारायण तिवारी जी कोई मामूली शख़्सियत नहीं है वरन् अपने में एक 'संस्था' हैं। उनके द्वारा स्थापित मानस-संगम प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लेखकों, कवियों और साहित्यकारों का एक विशाल संगम उपस्थित करता है जिसमें देश-विदेश के प्रतिष्ठित लोग आते हैं और लाभान्वित होते हैं।

आज के आधुनिक दौर में पवित्र नदी गंगा किस तरह प्रदूषित हो गई है, यही हमारी चिंता का विषय है। इसे कैसे प्रदूषण मुक्त किया जाय और इसकी जीवन दायिनी शक्ति को बरक़रार रखा जाय यही रचनाकारों की भी चिंता का विषय है। इस आलेख में लेखक ने अनेक रचनाकारों द्वारा गंगा की महिमा और गंगा की इस परेशानी का जो चित्रण किया है उसे उकेरते हुए एक गंभीर विषय पर विचार-विमश्र और समाधान के लिये प्रेरित किया है।

कविवर रहमान अली जो पेशे से रिक्शा चालक हैं गंगा के प्रति उनकी आस्था दृष्टव्य है :

माधी मेला चलो अकेला
माँने तुझे बुलाया है
निकला दिनकर
पथ में चलकर, अपना सीस झुकाया है
अंकित मुसकान। करता गुणगान। गंगा तट पर आया है।

इस लेख में तिवारी जी ने रतलाम के कवि प्रोफ़ेसर अज़हर, दीन मुहम्मद 'दीन', शायर नज़ीर बनारसी, अशफ़ाक़ उलराह ख़ाँ वारसी, राही मासूम रज़ा, रसलीन, 'गंगाष्टक' के रचयिता अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना आदि कवियों के गंगा पर लिखे उद्धरण देकर यह सिद्ध किया है कि गंगा नदी प्रत्येक भारतवासी के लिये पवित्र है और उसकी रंगों में प्रवाहित है। तिवारी जी ने रामकथा और मुस्लिम साहित्यकार' पुस्तक दो खण्डों में प्रकाशित कर साम्प्रदायिक सौहार्द का अत्यंत सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है जो हिन्दी साहित्य को तो समृद्ध करता ही है बल्कि इन पुस्तकों का विश्व साहित्य में भी अपना विशिष्ट स्थान है।

प्रो. डा. किश्वर सुल्ताना

C/o डा. ज़हीर अली सिद्दीक़ी
चौक मोहम्मद साईद ख़ाँ
लंगरख़ाना, रामपुर–244901 (उ.प्र.)
मो. 9412587041

एक प्रतिक्रिया :

'फिरन में छिपाए तिरंगा'

लाखों विस्थापितों की अभिव्यक्ति

पाठकों ने युवा कवि एवं पत्रकार श्री महाराजाकृष्ण 'भरत' के काव्य संग्रह 'फिरन में छिपाए तिरंगा' की समीक्षा गत जनवरी अंक में पढ़ी, जो एक गैर कश्मीरी भाषा लेखक श्री अशोक वाजपेयी ने लिखी थी। अब यहां प्रस्तुत है कश्मीर के ही एक भुक्तभोगी श्री स्वरूप नारायण पिशन की अनुभूति में उक्त काव्य संकलन पर एक नज़र।

–च.ल.स.

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम	:	**'फिरन में छिपाए तिरंगा'** (काव्य संग्रह)
लेखक	:	**महाराजकृष्ण 'भरत'**
प्रकाशक	:	अनिल प्रकाशन, 2619-20, न्यू मार्किट नई सड़क, दिल्ली-6
मूल्य	:	60 रुपए, पृष्ठ : 128

'फिरन में छिपाए तिरंगा' काव्य संग्रह की कविताओं को आत्मसात् करते हुए कश्मीर में हुई त्रासदियों के चित्र आंखों के सामने झलकने लगे। मन की टीस और चुभन एक बार फिर गहरी हो उठी। संग्रह के **'शुभारीष'** में पूर्व प्रधानमंत्री एवं प्रतिपक्ष के नेता **श्री अटल बिहारी वाजपेयी** ने कवि महाराज कृष्ण 'भरत' के बारे में सत्य कहा है... *'उनके हृदय में लहरा रहा देश भक्ति का तिरंगा आहत हुआ, वे हर दुःख झेल कर भी अपनी देश भक्ति की ज्वाला प्रखर किए रहे, अन्य लाखों कश्मीरियों की भांति।'* वस्तुतः कश्मीरियों ने क्या नहीं सहा, तिरंगे की शान-बान की रक्षा के लिए। कवि 'मेरी जन्मभूमि!' नामक कविता में मुखरित हो उठा है :

'तुम मेरी अस्मिता हो
जन्म भूमि,
मेरी नस-नस में
बस है तुम्हारा आकार! इतिहास!
कैसे पाऊंगा तुम्हें भूल।'

संग्रह के प्राक्कथन में कवि ने लिखा है *'चाह यही है कि अपने समाज की व्यथा-कथा अपनी मातृभूमि के लोगों तक पहुंचा सकूं।'* और कविताएं इस उद्देश्य में बहुत सफल हैं। कविताएं पढ़ते-पढ़ते बार-बार यही एहसास होता है कि कवि ने लाखों विस्थापितों की समय-समय पर उठने वाली भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है। 'शीर्षकहीन' कविता में कवि हृदय कहता है–

'इस बियाबान शहर में
जहां
पेड़ों के नहीं
आदमियों के जंगल है।'

यत्र-तत्र इन कविताओं में कश्मीर की मार्मिक दशा पर कवि की पैनी नजर द्रष्टव्य है :

'भूल चुके हैं–
अपना परिचय
घर मुहल्ले-गलियारे।'

दयनीय जीवन जी रहे विस्थापितों के बारे में 'राशन कार्ड!' नामक कविता में कवि मन कह उठता है :

'राशन और रिलीफ से
जुड़ गया है–
एक विस्थापित का भविष्य!'

काव्य संग्रह की 71 कविताओं को चार भागों में बांटकर कवि ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया है।

भारतीय संस्कृति का स्मरण दिलाते हुए कवि कहता है–

'कश्मीर की कश्मीरियत है–
शैव दर्शन
भारतीयता
वेद-पुराण-उपनिषद्,
जीवन जीने का दर्शन...'

व्यंग्य बाण से सच बात को दर्शाने का अनूठा ढंग यू है :

''सरकारी कबूतरखाने' में,
लम्हों का विषाक्त जीव
रात में जब आती है...
मामूली सी दो गज की जमीन में
सट जाते हैं
कद्दावर लोग।''

और कश्मीर की व्यथा को इस रूप में चित्रित किया गया है :

'आज
निराशा ओढ़े
मेरी वादी
व्यथित मन
सजल नयन से
सुना रही है
अपनी व्यथा।'

मनोदशा का सजीव चित्रण....

'कोई कविता
बन नहीं पाती
भावनाएं
हिमानी बन चुकी हैं।'

इस प्रकार कवि की सुन्दर, अनूठी अभिव्यक्ति, शब्दों की सरलता-तरलता मन को छू लेती है–

'मैं नहीं भूला हूं
बौद्ध विहार
मार्तण्ड के भग्नावशेष
शंकराचार्य, हरी पर्वत का
शंख निनाद....'

प्रायः कश्मीर के प्रतिष्ठित साहित्यकारों की कविताओं को समय-समय पर पढ़ने का सुअवसर मिला है लेकिन विस्थापन काल के इन वर्षों को केन्द्रित कर लिखी गई कविताओं को पुस्तकाकार में पढ़ने का सौभाग्य पहली बार मिला। काव्य संग्रह का आकार आकर्षक है। कागज व छपाई भी बढ़या है। 60 रु. मूल्य भी अधिक नहीं है। पुस्तकालयों के लिए तो काव्य संग्रह संग्रहणीय है ही।

–स्वरूप नारायण पिशन, गाजियाबाद, (उ.प्र.)

□□□

लल-वाक्यामृत

आमि पन सोदरस नावि छ्यस लमान,
कति बोजि दय म्योन म्यति दियि तार।
आम्यन टाक्यन पोन्यू जन शमानृ,
जुव छम ब्रमान घर गच्छहा॥
–लल द्यद

कच्चे-धागे सों सागर में नैया खेवन जाये,
जो सुन लेते साजन मेरे मुझको ठौर लगाए।
माटी के बासन में जल-ज्यों रिस-रिस के बह जाये,
घर आवन को जिया मोरा तब घड़ी-घड़ा ललचाए॥
–दीनानाथ नादिम
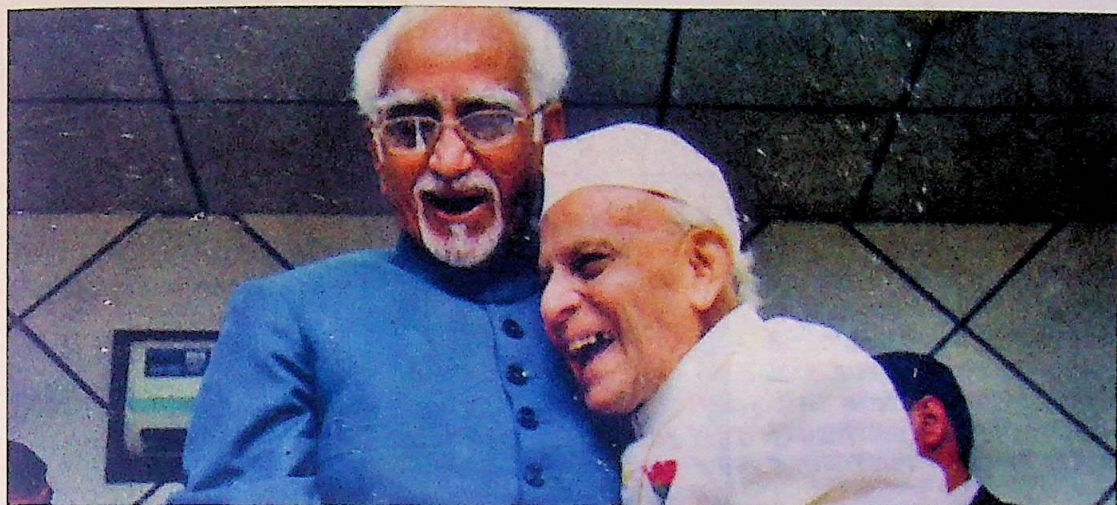
सुप्रसिद्ध उर्दू कवि पण्डित आनन्द मोहन जुत्शी गुलजार दहेलवी के 90वें जन्मदिन पर उनके नोएडा स्थित आवास में समारोह में उपराष्ट्रपति हामिद अनसारी ने उनको अभिनन्दन किया।

जयपुर में आयोजित किसान काव्य सम्मेलन 2 बायें में– संगम की सचिव डॉ. बीना कविता सुनाते हुए। दायें मंच पर आसीन कवि मण्डली में संगम की आजीवन सदस्य सुरभि सबसे दायें सप्रू ने कविता सुनाई।
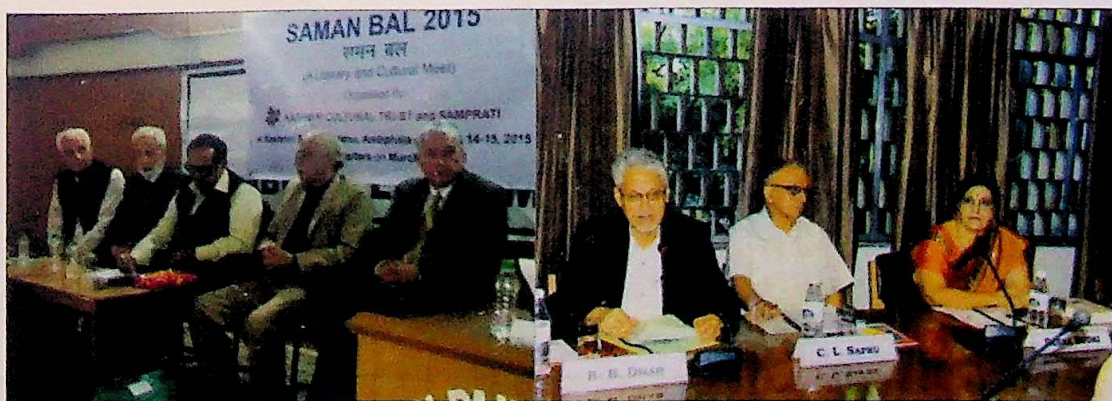
'समनबल' के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में ''वाख'' के सम्पादक डॉ. ओमकार कौल थे।

पोइट्री सोसाइटी तथा के. ई. सी. एस. एस. के तत्वाधान में आयोजित ललद्यद संगोष्ठी पर मंचासीन वक्ता।

डॉ. बीना बुदकी सचिव हिन्दी कश्मीरी संगम ने सम्पादकीय कार्यालय 102-ए, एस.जी. इम्प्रेशन सेक्टर-4बी, वसुन्धरा (गाज़ियाबाद-उ.प्र.) 201012 से प्रकाशित किया। मुद्रक : लक्ष्मी प्रिंट इंडिया, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095